Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 1-2

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

6-13 जमादी अव्वल 1441 हिजरी कमरी 2-9 फतह 1398 हिजरी शमसी 2-9 जनवरी 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

याद रखो मुत्तकी का यह काम नहीं कि वह उन लोगों से झगड़े और मुकाबला करे जो अल्लाह तआला के कुरब का स्तर रखते हैं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

तसर्रुफ़ात की दो किस्में

हाँ ! यह सच्ची बात है जिसका कोई इनकार नहीं कर सकता कि अल्लाह तआला के तसर्रुफ़ात असंख्य तथा बेशुमार हैं। उनकी गिनती और गिनती असम्भव है। इन्सान जिस क़दर नेकी और कोशिश करता है उसी क़दर वह अल्लाह तआला के क़रीब होता जाता है और इस तुलना से उन तसर्रुफ़ात का एक रंग इस पर आता जाता है और तसर्रुफ़ात अल्लाह की वाक़फ़ीयत का दरवाज़ा इस पर खुलता है। इस बात का बयान कर देना भी यथा अवसर मालूम होता है कि तसर्रुफ़ात भी दो किस्म के होते हैं। एक मख़लूक़ के एतबार से और दूसरे क़ुरब के एतबार से। अनबया अलैहिमुस्सलाम के साथ एक तसर्रुफ़ तो इसी मख़लूक़ की नौईयत और एतबार से होता है जो يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْاَسْوَاقِ (अल-फ़ुर्क़ान:8) इत्यादि के रंग में होता है। सेहत बीमारी इत्यादि उस के ही हाथ में होता है और एक नया तसर्रुफ़ क़ुरब के स्तर में होता है। अल्लाह तआला ऐसे तौर पर उनके क़रीब होता है कि उनसे बातें और वार्तालाप शुरू हो जाते हैं और उनकी दुआओं का जवाब मिलता है मगर कुछ लोग नहीं समझ सकते और यहां तक ही नहीं बल्कि केवल वार्तालाप और बातों से बढ़कर एक समय ऐसा आ जाता है कि उलूहियत की चादर उन पर पड़ी हुई होती है और ख़ुदा तआला अपनी हस्ती के तरह-तरह के नमूने उनको दिखाता है और यह एक ठीक उदाहरण उस क़ुरब और सम्बन्ध का है कि जैसे लोहे को किसी आग में रख दें तो वह असर धारण हो कर लाल आग का एक टुकड़ा ही नज़र आता है। इस वक़्त इस में आग की सी रोशनी भी होती है और गर्मी जो एक गुण आग का है वह भी इस में आ जाती है। मगर इस के बावजूद यह एक स्पष्ट बात है कि वह लोहा आग या आग का टुकड़ा नहीं होता।

एक अवस्था पर अल्लाह वालों से ऐसे कर्म प्रकट होते हैं जो अपने अंदर उलूहियत के गुण रखते हैं।

इसी तरह हमारे तजुर्बा में आया है कि अल्लाह वाले क़ुरब इलाही में ऐसे स्तर तक जा पहुंचते हैं जबकि रब्बानी रंग बशर होने के रंग तथा ख़ुशबू को सम्पूर्ण रूप से अपने रंग के नीचे छुपा लेता है और जिस तरह आग लोहे को अपने नीचे ऐसा छुपा लेती है कि ज़ाहिर में केवल आग के और कुछ नज़र ही नहीं आता और ज़ल्ली तौर पर वह अल्लाह तआला के गुणों का रंग अपने अंदर पैदा करता है।

इस वक़्त इस से दुआ तथा विनय के इलावा ऐसे कर्म प्रकट होते हैं जो अपने अंदर उलूहियत के गुण रखते हैं और वे ऐसी बातें मुँह से निकालते हैं जो जिस तरह कहते हैं इसी तरह हो जाती हैं। क़ुरआन करीम में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हाथ और ज़बान से ऐसे मामलों के प्रकट होने की स्पष्ट रूप से बेहस है जैसा कि مَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى (अल-अनफ़ाल:18) औरा एसा ही मोजिज़ा शक़्क़ुल क़मर और इसी तरह पर प्राय मरीज़ों और कमज़ोर लोगों का अच्छा कर देना प्रमाणित है। क़ुरआन शरीफ़ में जो हमारे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह इरशाद हुआ कि مَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى (अन्नजम:4) यह इस अत्यधिक और उच्च क़ुरब ही की तरफ़ इशारा है और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कमाल तज़किया नफ़स और क़ुरब इलाही का एक प्रमाण है।

हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला मोमिन बन्दा के हाथ, पांव और आँखें इत्यादि इत्यादि हो जाता है इस का अर्थ यह है कि समस्त अंग अल्लाह तआला के आज्ञापालन के रंग से ऐसे रंगीन हो जाते हैं कि मानो वे एक इलाही माध्यम हैं जिनके द्वारा समय समय पर अल्लाह तआला के कर्म प्रकट होते हैं या एक स्वच्छ आइना हैं जिसमें समस्त अल्लाह तआला की इच्छाएं सम्पूर्ण रूप से प्रतिबिम्बित होती रहती हैं या यह कहो कि इस हालत में वे अपनी इन्सानियत से सम्पूर्ण रूप से हट जाते हैं। जैसे जब इन्सान बोलता है तो उस के दिल में विचार होता है कि लोग उस की फ़साहत (वाक पटुता) और उत्तम शैली और की प्रशंसा करें। मगर वे लोग जो ख़ुदा के बुलाए बोलते हैं और उनकी रूह जब जोश मारती है। तब अल्लाह तआला ही की तरफ़ से एक मौज इस पर प्रभावकारी हो कर लहर पैदा कर देती है और अपनी आवाज़ और वाणी से वे नहीं बोलते बल्कि इलाही हाल और क़ाल और जोश से। और ऐसा ही जब वे देखते हैं तो जैसा कि नियम है कि देखने में फ़िक्र शामिल है उनका देखना अपने दख़ल से नहीं बल्कि ख़ुदा तआला के नूर से। और वे उनको एक ऐसी चीज़ दिखा देता है जो दूसरी पर ग़ौर नज़र भी नहीं देख सकती।

मोमिन की फ़िरासत से डरना चाहिए

जैसे आया है कि اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ अर्थात मोमिन की फ़िरासत से बचोगे , क्योंकि तुम्हारा जाना है और इस का आना। तुम्हारा कथन है इस का आचरण। जैसे एक घड़ी चलती है इस के पुर्ज़े तो उसे चलाते रहेंगे। बादलों में तुम तीन बजे की जगह सात बजे का समय कह सकते हो मगर घड़ी जो इसी आशय के लिए बनाई गई है वह तो ठीक वक़्त बतलाएगी और भूल ना करेगी। अत: अगर इस से झगड़ोगे तो केवल अपमान के क्या लोगे? इसी तरह से याद रखो कि मुत्तक़ी का यह काम नहीं कि वह उन लोगों से झगड़े और मुक़ाबला करे जो अल्लाह तआला के क़ुरब का दर्जा रखते हैं और दुनिया में विभिन्न नामों से पुकारे जाते हैं। अत: मोमिन के मुक़ाबला के वक़्त डरो और इत्तक़ूओ के चरितार्थ बनो। ऐसा ना हो कि तुम झूठे निकलो और फिर उस ग़लती के बदतरीन परिणाम भुगतो। क्योंकि मोमिन तो अल्लाह तआला के नूर से देखता है और वो नूर तुम को नहीं मिला। इसलिए तुम टेढ़े चल सकते हो मगर मोमिन हमेशा सीधा ही चलता है। तुम ख़ुद ही बतलाओ कि क्या वह आदमी जो एक अन्धकार में चल रहा है इस आदमी का मुक़ाबला कर सकता है जो चिराग़ की रोशनी में जा रहा है? कदापि नहीं। अल्लाह तआला ने आप फ़रमाया है هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ (अल--अनआम:51) क्या अंधा और सुजाखा बराबर हो सकते हैं? हरगिज़ नहीं। अत: जब हम इस बात को देखते हैं तो फिर किस क़दर ग़लती है कि हम इस से लाभ नहीं उठाते।

अत: यह है कि मोमिन की फ़िरासत से डरना चाहिए और मोमिन के मुक़ाबला के लिए तैयार हो जाना बुद्धिमान व्यक्ति का काम नहीं है और मोमिन की शनाख़्त उन्हीं चिन्हों तथा निशानों से हो सकती है जो हम ने अभी वर्णन किए हैं। इसी इलाही फ़िरासत

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

इख़लास तथा वफ़ा की साक्षात नमूना बदरी सहाबी हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ी अल्लाह अन्हो) बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल का ज़िक्र ख़ैर

हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि के पिता रईसुल-मुनाफेकीन अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल की इस्लाम विरोधी तकलीफ़ वाले काम और इस के मुक़ाबला पर नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के क्षमा तथा माफी और उस पर की जाने वाली बेमिसाल शफ़क़तों का वर्णन।

अदरणीया अमतुल-हफ़ीज़ साहिबा पत्नी मौलाना मुहम्मद उम्र साहिब केरला इंडिया, आदरणीय चौधरी मुहम्मद इब्राहीम साहिब साबिक़ मैनेजर तथा पब्लिशर मासिक अन्सारुल्लाह पाकिस्तान, आदरणीय राजा मसऊद अहमद साहिब भूतपूर्व सैक्रेटरी वसाया यू.के और आदरणीया सालहा अनवर उबरोड़ा साहिबा पत्नी अनवर उबरोड़ा साहिब सिंध, पाकिस्तान की वफ़ात पर मरहूमीन का ज़िक्र ख़ैर और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 15 नवम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

बदरी सहाबी रज़ि के बारे में मैंने ख़ुत्बों का जो सिलसिला शुरू किया हुआ है इस के बारे में पिछला ख़ुत्बा जो मैंने दिया वह जर्मनी में था इस में हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि बिन अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल का ज़िक्र चल रहा था और इस अन्तर्गत हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि के बाप अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल का ज़िक्र जहां मैं ने ख़त्म किया था वह जंग उहद के हवाले से हुआ था कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नौजवानों की बात मान कर मदीना से बाहर जा कर दुश्मन का मुक़ाबला करने का फ़ैसला किया तो अब्दुल्लाह बिन अबी पहले तो अपने साथियों सहित साथ चल पड़ा लेकिन उहद के दामन में पहुंच कर अपने तीन सौ साथियों को लेकर ग़द्दारी दिखाते हुए मदीना की तरफ़ यह कहते हुए वापस लौट गया कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरी बात नहीं मानी और मदीना में रह कर दुश्मन का दिफ़ा नहीं किया जो हम चाहते थे और यह भी कहा कि यह भी कोई लड़ाई है। यह तो अपने आपको हलाकत में डालने वाली बात है और वह कहने लगा कि मैं इस हलाक़त में अपने आपको नहीं डालता। बहरहाल उस के दिल में शुरू से ही निफ़ाक़ था, मुनाफ़क़त थी और मुनाफ़िक़ बुज़दिल होता है और यह बुज़दिली यहां आ के प्रकट भी हो गई। बहरहाल उस के अपने साथियों सहित जाने के बाद मुसलमानों की संख्या सिर्फ सात सौ रह थी।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अन्बिया पृष्ठ 487)

इस के बावजूद जब जंग हुई है तो इस में मुसलमानों का पलड़ा भारी था। लगभग फ़तह हो गई थी लेकिन आख़िर पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्म पर पूरी तरह अमल ना करने की वजह से और दर्रा छोड़ने की वजह से मुसलमानों को बड़े नुक़्सान का सामना करना पड़ा। इस अवस्था के बाद अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल का जो व्यवहार था किस तरह का था और किस-किस तरह उसने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुसलमानों के बारे में तकलीफ़ वाली और उपहास की बातें करनी शुरू कर दें। इस का कुछ विस्तार अब मैं वर्णन करूँगा। इस में हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि की इस्लाम और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत भी प्रकट होती है और यह भी साबित होता है कि उनके लिए अपने बाप के ख़िलाफ़ कोई भी क़दम उठाने में कोई बात रोक ना थी अगर वह इस्लाम की इज़्ज़त और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इज़्ज़त पर हमले करता।

इस बारे में सीरत ख़ातमुल अन्बिया में शुरू का जो ज़िक्र है कि किस तरह उन लोगों ने उपहास उड़ाना शुरू किया ।हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि लिखते हैं कि जंग उहद के बाद मदीना के यहूद और मुनाफ़क़ीन जो जंग बदर के नतीजे में कुछ प्रभावित हो गए थे अब कुछ दिलेर हो गए बल्कि अब्दुल्लाह बिन उबी और इस के साथियों ने तो खुल्लम खुल्ला उपहास उड़ाना और ताना देना शुरू कर दिए।(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अन्बिया पृष्ठ 506)लेकिन आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन लोगों से दया का व्यवहार ही फ़रमाते रहे और बजाय उस के कि इस नरमी के सुलूक से उनको कुछ शर्मिंदगी होती यह लोग ढिटाई में और बातें करने में बढ़ते चले गए। रईसुल-मुनाफेकीन अब्दुल्लाह बिन उबी की बढ़ी बढ़ी बातें और इस के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि की आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से मुहब्बत और फ़िदाईत का इज़हार इस एक घटना से हो जाता है 5 हिज्री में जंग बनू मुस्तलक़ से वापसी पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कुछ दिन मरीसीअ में निवास फ़रमाया। यह बनू मुस्तलक़ के पानी के एक चश्मे का नाम है। मगर इस निवास के दौरान मुनाफ़क़ीन की तरफ़ से एक ऐसी घृणित घटना हुई जिससे क़रीब था कि कमज़ोर मुसलमानों में आपस में जंग तक नौबत पहुंच जाती मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मौक़ा पहचाना और आप के मक़नातीसी असर ने इस फ़ित्ने के ख़तरनाक नतीजे से मुसलमानों को बचा लिया। घटना यूं हुई कि हज़रत उमर रज़ि का एक नौकर जहजह नामक था वह मरीसीअ के स्थानीय चश्मे पर पानी लेने के लिए गया। संयोग से उस वक़्त एक दूसरा शख़्स सिनान नामक भी पानी लेने के लिए वहां पहुंचा जो अन्सार के हलीफ़ों में से था। यह दोनों शख़्स जाहिल थे और बिलकुल साधारण लोगों में से थे। चश्मे पर यह दोनों शख़्स आपस में झगड़ पड़े और जहजह ने सिनान को एक चोट लगाई, उस को मारा। बस फिर सिनान ने ज़ोर ज़ोर से शोर मचाना शुरू कर दिया, चिल्लाना शुरू कर दिया कि हे अन्सार के गिरोह! मेरी मदद को पहुँचो कि मैं पिट गया और मुझ पर हमला हो गया। जब जहजह ने देखा कि सिनान ने अपनी क़ौम को बुलाया है तो वह भी जाहिल आदमी था, उसने भी अपनी क़ौम के लोगों को पुकारना शुरू कर दिया कि ए मुहाजिरीन भागो दौड़ो। अन्सार और मुहाजिरीन के कानों में यह आवाज़ें पहुंचीं तो वे अपनी तलवारें लेकर बे-तहाशा इस चश्मे की तरफ़ लपके और देखते ही देखते वहां एक अच्छी ख़ासी भीड़ जमा हो गया और क़रीब था कि कुछ जाहिल नौजवान एक दूसरे पर हमला कर देते लेकिन इतने में कुछ समझदार और मुख़लिस मुहाजिरीन तथा अन्सार भी अवसर पर पहुंच गए और उन्होंने शीघ्र लोगों को अलग अलग करके सुलह सफ़ाई करवा दी।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब यह ख़बर पहुंची तो आप ने फ़रमाया कि यह एक जाहिलियत का मुज़ाहरा है और इस पर नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया और बहरहाल इस तरह मामला बहरहाल रफ़ा दफ़ा हो गया लेकिन जब मुनाफ़क़ीन के सरदार अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल को जो इस जंग में शामिल था जो बनू मुस्तलक़ में था,जिस में आप गए थे इस में शामिल था इस घटना की सूचना पहुंची तो इस बुरी किस्मत वाले ने इस फ़ित्ने को फिर जगाना चाहा और अपने साथियों को आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ बहुत कुछ उकसाया और यह कहा कि यह सब तुम्हारा क़सूर है कि तुम ने उन बे-ख़ानुमाँ, बेसहारा मुसलमानों को पनाह देकर उनको सिर पर चढ़ा लिया है। अब भी तुम्हें चाहिए कि उनकी मदद से उनकी सहायता से हट जाओ। फिर यह अपने आप मदीना को छोड़ छाड़ कर चले जाऐंगे और अन्त में उस बुरी किस्मत वाले ने

यहां तक कह दिया कि لَئِنْ رَّجَعْنَا إِلَى الْمَدِينَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ (अल-मुनाफ़ेक़ून:9) कि क़ुरआन शरीफ़ में, सूर अल-मुनाफ़क़ून में है कि अर्थात देखो तो अब मदीना में जाकर इज़्ज़त वाला शख़्स या गिरोह जो है वह अपमानित शख़्स या गिरोह को अपने शहर से बाहर निकाल देता है कि नहीं? इस वक़्त एक मुख़लिस मुस्लमान बच्चा ज़ैद बिन अर्क़म भी वहां बैठा हुआ था उसने अब्दुल्लाह के मुँह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में यह शब्द सुने तो व्याकुल हो गया और फ़ौरन अपने चाचा के द्वारा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस घटना की सूचना दी। अब यह देखें कि बच्चे भी किस हद तक इख़लास और वफ़ा रखते थे और बड़े होशियार रहते थे और समझते थे कि क्या बात ग़लत है और क्या सही। बहरहाल उसने अपने चाचा को सूचना दी। इस वक़्त आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हज़रत उमर रज़ि भी बैठे थे। वह यह शब्द सुनकर ग़ुस्से और ग़ैरत से भर गए और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन करने लगे कि हे रसूलुल्लाह! मुझे आज्ञा दें कि मैं इस मुनाफ़िक़ फ़ित्ना पैदा करने वाले की गर्दन उड़ा दूं। आप ने कहा उम्र! जाने दो। क्या तुम इस बात को पसंद करते हो कि लोगों में यह चर्चा हो कि मुहम्मद अपने साथियों को क़त्ल करवाता फिरता है। फिर आप ने अब्दुल्लाह बिन उबी और इस के साथियों को बुलवाया और उन से पूछा कि यह क्या मामला है? यह बात मैं ने सुनी है। वे सब कसमें खा गए कि हम ने तो कोई ऐसी बात नहीं की। कुछ अन्सार ने भी सिफ़ारिश के तौर पर यह निवेदन किया कि ज़ैद बिन अर्क़म को ग़लती लगी होगी यह इस तरह बात नहीं कर सकता। आप ने इस वक़्त अब्दुल्लाह बिन उबी और इस के साथियों के वर्णन को क़बूल फ़र्मा लिया और ज़ैद की बात रद्द कर दी जिस से ज़ैद रज़ि को सख़्त तकलीफ़ पहुंची और सदमा हुआ मगर बाद में कुरआन की वह्य ने जो आयत मैंने पढ़ी है ज़ैद रज़ि की बात की तसदीक़ फ़रमाई और मुनाफ़क़ीन को झूठा करार दिया।

उधर तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन उबी इत्यादि को बुलाकर इस बात की तसदीक़ शुरू फ़र्मा दी और इधर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ि से इरशाद फ़रमाया कि इसी वक़्त लोगों को कूच का हुक्म दो। यह वक़्त दोपहर का था जबकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उमूमन दोपहर को कूच नहीं फ़रमाया करते थे ,सफ़र नहीं शुरू किया करते थे क्योंकि अरब के मौसम के लिहाज़ से यह वक़्त सख़्त गर्मी का वक़्त होता है और इस में सफ़र करना बहुत तकलीफ़ वाली होता है मगर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस वक़्त के हालात के अनुसार यही मुनासिब ख़्याल फ़रमाया कि अभी यहां से रवाना हो जाया जाए। अत: आप के हुक्म के अधीन शीघ्र इस्लामी लश्कर वापसी के लिए तैयार हो गया। शायद इसी अवसरपर उसैद बिन हुज़ैर अनसारी रज़ि जो क़बीला औस के निहायत प्रसिद्ध रईस थे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल अल्लाह आप तो उमूमन ऐसे वक़्त में सफ़र नहीं फ़रमाया करते आज क्या मामला है कि इस वक़्त दोपहर को सफ़र शुरू करने लगे हैं। आप ने फ़रमाया उसैद! क्या तुमने नहीं सुना कि अब्दुल्लाह बिन अबी ने क्या शब्द कहे हैं? वह कहता है कि हम मदीना चल लें वहां पहुंच कर इज़्ज़त वाला शख़्स ज़लील शख़्स को बाहर निकाल देगा। उसैद ने बेसाख़ता निवेदन किया कि हाँ हे रसूलुल्लाह ठीक है। यह बात तो है लेकिन आप चाहें तो बे-शक अब्दुल्लाह को मदीना से बाहर निकाल सकते हैं क्योंकि अल्लाह की कसम इज़्ज़त वाले आप हैं वह नहीं और वही ज़लील है। फिर उसैद बिन हुज़ैर ने निवेदन किया कि हे अल्लाह के रसूल आप जानते हैं कि आप के तशरीफ़ लाने से पहले अब्दुल्लाह बिन अबी अपनी क़ौम में बहुत सम्मान्नीय था और इस की क़ौम उस को अपना बादशाह बनाने की तैय्यारी में थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तशरीफ़ लाने से इस की कोशिशें जो मिट्टी में मिल गईं। अत: इस वजह से इस के दिल में आपके बारे में हसद बैठ गया है। इसलिए आप उस की इस बकवास की कुछ पर्वा ना करें और इस से क्षमा फ़रमाएं। थोड़ी देर में अब्दुल्लाह बिन अबी का लड़का जिसका नाम हुबाब था मगर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे बदल कर अब्दुल्लाह कर दिया था अर्थाय यही हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि जिनका ज़िक्र हो रहा है। वह एक निहायत मुख़लिस सहाबी थे, घबराए हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और कहने लगे। हे अल्लाह के रसूल! मैंने सुना है कि आप मेरे बाप की गुस्ताख़ी और फ़ित्ना फैलाने की वजह से इस के क़तल का हुक्म देना चाहते हैं। अगर आप का यही फ़ैसला है तो आप मुझे हुक्म फ़रमाएं मैं अभी अपने बाप का सिर काट कर आप के क़दमों में ला डालता हूँ मगर आप किसी अन्य को ऐसा इरशाद ना फ़रमाएं क्योंकि मैं डरता हूँ कि जाहिलियत की कोई रग किसी वक़्त मेरे बदन में जोश मारे और मैं अपने बाप के क़ातिल को कोई नुक़्सान पहुंचा बैठूँ और ख़ुदा की रज़ा चाहता हुआ भी जहन्नुम में जा गिरूं। चाहता तो मैं यह हूँ कि अल्लाह तआला को राज़ी करूँ लेकिन एक मुस्लमान को क़तल कर के मैं जहन्नुम में चला जाऊं। आप ने उन्हें तसल्ली दी और फ़रमाया कि हमारा हरगिज़ यह इरादा नहीं है बल्कि हम बहरहाल तुम्हारे पिता के साथ नरमी और एहसान का मामला करेंगे।

मगर अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह बिन अबी को अपने बाप के ख़िलाफ़ इतना जोश था कि जब लश्कर इस्लामी मदीना की तरफ़ लौटा तो अब्दुल्लाह अपने बाप का रास्ता रोक कर खड़े हो गए और कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम मैं तुम्हें वापस नहीं जाने दूँगा जब तक तुम अपने मुँह से यह इक़रार ना करो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुअज़्ज़िज़ हैं और तुम ज़लील हो और अब्दुल्लाह ने इस इसरार से अपने बाप पर ज़ोर डाला कि आख़िर उसने मजबूर हो कर ये शब्द कह दिए जिस पर अब्दुल्लाह ने इस का रास्ता छोड़ दिया।

(उद्धरित सीरत ख़ातमुल अन्बिया पृष्ठ 557-559 से 561)

इब्न साद ने इन शब्दों में यह घटना वर्णन की है कि जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को कूच का हुक्म दिया तो अब्दुल्लाह बिन अबी के बेटे हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि ने अपने पिता का रास्ता रोक लिया और ऊंट से नीचे उतर आए और अपने पिता से कहने लगे कि जब तक तुम यह इक़रार नहीं करते कि तो ज़लील तरीन और मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अज़ीज़ तरीन हैं तब तक मैं तुझे नहीं छोड़ूँगा। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पास से गुज़रे तो आप ने फ़रमाया उसे छोड़ दो। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने भी देख लिया। फ़रमाया उसे छोड़ दो। आप ने फ़रमाया कि मेरी उम्र की क़सम हम इस से ज़रूर अच्छा बर्ताव करेंगे जब तक यह हमारे बीच ज़िन्दा है।(अत्तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 50 ग़ज़व रसूलुल्लाह, दारुल कुतुब अल्इलमिया बेरूत 1990 ई यह तबक़ातुल कुबरा में लिखा है और इस के इलावा यह भी ज़िक्र मिलता है कि हज़रत अब्दुल्लाह के पिता अब्दुल्लाह बिन अबी ने यह कहा कि لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ अर्थात इज़्ज़त वाला शख़्स या गिरोह ज़लील शख़्स या गिरोह को अपने शहर से बाहर निकाल देगा तो हज़रत अब्दुल्लाह ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह वही ज़लील है और आप ही अज़ीज़ हैं। ख़ुद बेटे ने अपने बाप के बारे में कहा।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मारफ़तिल सहाबा भाग 3 पृष्ठ 941 "अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह अन्सारी दारुल जैल बेरूत)

फिर एक नापाक आरोप जो मुनाफ़क़ीन की तरफ़ से लगाई गई, इफ़क की घटना से इस का सम्बन्ध है जिसका बानी अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल था। जंग बनू मुस्तलक़ से वापसी पर इफ़क की घटना हुई जिस में हज़रत आयशा रज़ि की ज़ात पर गंदे आरोप लगाए गए थे और इस आरोप का बानी अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल था। इफ़क़ की घटना के बारे में पिछले साल के आख़िर में एक ख़ुत्बे में विस्तार से वर्णन कर चुका हूँ (ख़ुत्बा फ़र्मूदा 14 दिसम्बर 2018 ई, अलफ़ज़ल इंटरनेशनल 4 जनवरी 2019 ई) लेकिन इस हवाले से भी यहां कुछ वर्णन कर देता हूँ । हज़रत आयशा रज़ि की रिवायत भी यही है। वह पूरी रिवायत तो नहीं उस का कुछ हिस्सा वर्णन करूँगा

आप फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी सफर में जाने का इरादा फरमाते थे, तो आप अपनी पत्नियों के बीच कुरआ डालते फिर जिस का कुर्आ निकलता उस को आप अपने साथ ले जाते थे। अत: इस सपर में कुर्अ: मेरे नाम निकला। मैं आप के साथ गई। उस समय हिजाब का आदेश नाज़िल हो चुका था, पर्दे का आदेश आ चुका था। मैं होदज में बिठाई जाती (होदज, जो ऊंट के ऊपर सवारी की जगह बना होता है, ढंका होता है), और होदज समेत उतारी जाती है। कहती हैं हम इसी तरह सफर में पढ़ में रहे। जब रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने हमला से फारिग़ हुए और वापस लौट आए और हम मदीना के क़रीब थे कि आपने एक रात कूच का आदेश दिया। जब लोगों ने कूच की घोषणा की, तो मैं भी चल पड़ी और सेना से आगे निकल गई। कहती हैं मैं पैदल ही चल पड़ी। क्योंकि पाख़ाना के लिए जाना था, तो एक तरफ होकर चली गईं जब मैं अपनी ज़रूरत से फारिग़ हुई तो अपने होदज में चली गई और मैंने अपने सीने पर हाथ रखा तो क्या देखती हूं कि काले नगीनों को एक हार था जो टूट कर मेरे गले से गिर गया है। मैं वापस लौटी। अपना हार ढूंढने लगी। इतने में वे लोग जो मेरे ऊंठ को तलाश करते थे आए और उन्होंने मेरा होदज उठा लिया

और वह होदज मेरे ऊंठ के ऊपर रख दिया था, जिस पर मैं सवार हुआ करता था। वह खाली था। लेकिन वे समझे कि मैं इस में हूं। बहरहाल उन्होंने ऊंट को उठा कर चल चला दिया और ख़ुद भी चल दिए। जब सारा लश्कर गुज़र गया और इस के बाद मैं ने अपना हार भी ढूंढ लिया तो मैं डेरे में वापस आ गई। इस स्थान पर आ गई जिस में मैं थी और मैंने सोचा कि वे मुझे न पाऐंगे, तो वे वापस यहीं लौट आएंगे। कहती हैं, मैं बैठी हुई थी इसी समय में मेरी आंख लग गई और मैं सो गई।

सफवान बिन मुअतल सुलमा ज़कवानी सेना के पीछे यह देखने के लिए रहा करते थे तो कोई चीज़ पीछे न रह गई हो। कहती हैं वह सुबह डेरे पर आए जहां हमारा पड़ाव था और उन्होंने एक सोए हुए इन्सान का वुजूद देखा और मेरे पास आए। और पर्दे के आदेश से पहले उन्होंने मुझे देखा हुआ था। वापस आए तो उन्होंने इन्ना लिल्लाह पढ़ा। इन के इन्ना लिल्लाह पढ़ने पर मैं जाग उठी। उसके बाद, पहले उन्होंने अपनी ऊंटनी बिठाई तो मैं उस पर सवार हो गई और वह ऊँट की नकेल पकड़ कर चल पड़े। कहती हैं यहां तक कि हम फौज में उस समय तक पहुंचे जब लोग दोपहर को आराम करने के लिए डेरों में थे। फिर जिस को हलाक होना था, वह मारा गया। अर्थात आरोप लगा कर आप को हलाकत में डाल लिया और इस आरोप का संस्थापक अब्दुल्ला इब्न अबी बिन सुलुल था। बहरहाल हम मदीना पहुंचे। मैं वहां एक महीने तक बीमार रही। किसी कारण से बीमार हो गई थी। मेरी इस बीमारी के कारण आरोप लगाने वालों की बातों का लोग चर्चा करते रहे। और मेरी इस बीमारी के मद्देनजर, मुझे जो बात संदेह में डालती थी, वह यह थी कि मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वह मेहरबानी न देखती थी जो मैं आप से अपनी बीमारी में देखा करती थी। आप केवल अन्दर आते और अस्सलामो अलैकुम कहते। फिर पूछते कि अब वह कैसी है। कहती हैं कि एक दिन मैं उम्मे मस्तह मनाफए के साथ मैं बाहर गई। पाख़ाना के लिए बाहर जाते थे, तब उस ने मुझे आरोप लगाने वालों के बारे में बताया।

जब मैं अपने घर लौटी तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास आए। और आप ने अस्सलामो अलैकुम कहा और आप ने पूछा कि अब तुम कैसी हो? मैंने कहा: मुझे मेरे माता-पिता के पास जाने की अनुमति दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे इस बात की आज्ञा दे दी। मैं अपने माता-पिता के पास आई तो मैंने अपनी माँ से पूछा कि लोग क्या बातें कर रहे हैं। मेरी माँ ने कहा कि बेटी इस बात से अपनी जान को व्यर्थ कष्ट में न डालो। लोग इस तरह की बातें करते ही हैं। मैंने कहा कि सुब्हनल्लाह। लोग इस तरह की बातों की चर्चा कर रहे हैं। फिर कहती हैं कि मैंने वह तरह रात इस तरह से काटी कि सुब्ह तक मेरे आंसू नहीं थमे। मुझे पूरी रात नींद नहीं आई और मैं रोती रही।

बहरहाल इस तरह आरोप की बातें होती रहीं। कुछ सहाबा से भी आप सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने परामर्श किया। एक दिन रसूलुल्लाह सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने बरीरा को जो हज़रत आयशा की सेविका थी उन को बुलाया और आप ने कहा कि बरीरा क्या तुम ने इस में हज़रत आयशा में कोई इस तरह की बात तो नहीं देखी है जो तुम्हें संदेह में डालती है? बरीरा ने कहा कि बिल्कुल नहीं। कोई इस तरह की बात मैंने नहीं देखी ।उस हस्ती की कसम है! जिसने आपको इस सच्चाई के साथ भेजा कि मैंने आयशा में और कुछ नहीं देखा, जिस को मैं उन के लिए बुरा समझूं कि वह कम आयु की एक छोटी लड़की है। लड़तपन है और नींद आ जाती है और आटा छोड़ कर सो जाती है। और घर में बकरी आ जाती है और उसे खा जाती है। अर्थात के बस असावधानी है और कुछ नहीं या उन को नींद आ जाती है। यह सुन कर उसी दिन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा को संबोधित किया और अब्दुल्ला बिन अबी बिन सुलुल की शिकायत की और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया, उस आदमी को कौन संभाले जिस ने मेरी बीवी के बारे में मुझे दु:ख दिया है। आप ने फरमाया मैं अल्लाह की कसम खाता हूं कि मुझे अपनी पत्नी में नेकी के अतिरिक्त कोई भी अच्छाई नहीं पाता, और उन्होंने एक ऐसे व्यक्ति का उल्लेख किया है जिसके बारे में मुझे भलाई के किसी बात का ज्ञान नहीं है। और मेरे घर वालों के पास जब भी वह आया करते थे तो वह मेरे साथ आते थे। कभी अकेले नहीं आए।

बहरहाल संक्षेप में यह है कि एक दिन आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सीधा मुझ से इस बारे में पूछा तो मैंने कहा अल्लाह की कसम मुझे पता चल गया है कि आप लोगों ने वह बातें सुनी हैं जिस का लोग आपस में वर्णन कर रहे हैं। बाते कर रहे हैं। मुझ पर आरोप लगा रहे हैं। अगर मैं आप से यह कहूं कि मैं बरी हूं मैंने कोई इस तरह की बात नहीं की और अल्लाह जानता है कि मैं वास्तव में बरी हूं आप मुझे सच्चा नहीं समझेंगे क्योंकि लोगों में यह इतना मशहूर हो चुका है। हर एक मानने लगा है। कुछ सहाबा जो हैं वे भी यह मानने लग गए हैं। फिर कहती हैं कि मैंने कहा अल्लाह की कसम मैं अपनी और आप की मिसाल नहीं पाती सिवाए यूसफ के बाप के। उन्होंने कहा था कि فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ धैर्य करना ही अच्छा है और अल्लाह सेही मदद मांगनी चाहिए। इस बात में जो लोग वर्णन कर रहे हैं । यह सूरत युसुफ में है। इस के बाद कहती हैं कि मैं एक तरफ हट कर अपने बिस्तर पर आ गई और मुझे उम्मीद थी कि अल्लाह मुझे बरी करेगा। आं हज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम को बताएगा कि मैं इस आरोप से बरी हूं। हज़रत आयशा बताती हैं कि इस घटना के बाद जब मैंने यह बात की इस घटना के बाद अल्लाह की कसम आप अभी बैठने के स्थान से अलग नहीं हुए थे कि जब आप ने आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से यह बात कही थी तो इस समय हज़रत अबू बकर भी थे और आप की माता भी थीं। दोने थे। कहती हैं कि आप न घर वाले कोई बाहर गया था सब घर वाले वहीं थे। इतने में आप पर वह्य नाज़िल हुई और वह्य के दौरान जो आपको तकलीफ होती थी वह आप को होने लगी। शरीर पसीना से भीग गया। कहती हैं कि जब आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से वह्य की अवस्था जाती रही। तो आप मुस्कुरा रहे थे और पहली बात जो आप ने फरमाई यह थी कि हे आयशा अल्लाह का शुक्र अदा करो कि अल्लाह तआला ने तुम्हारा बरी होना बता दिया है। मेरी मा ने मुझे कहा कि उठ कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जाओ। मैंने कहा अल्लाह का कसम हरगिज़ नहीं मैं उन के पास उठ कर हरगिज़ नहीं जाऊंगी और अल्लाह के सिवा किसी की शुक्रिया अदा नहीं करोंगी। अल्लाह तआला ने यह वह्य की थी إِنَّ الَّذِيْنَ جَاءُوْا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ वे लोग अर्थात जिन्होंने आरोप लगाया था वे तुम में से ही एक जत्था था । इन सब बातों के बावजूद बहराहल बरीयत हो गई। आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घोषणा फरमाई कि। कुरआन शरीफ में अल्लाह तआला ने आयत नाज़िल फरमा दी बल्कि हज़रत आयशा फरमाया करती थीं कि मुझे विचार आया कि अल्लाह तआला आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को रोया या किसी रंग में बता देगा। यह मुझे उम्मीद नहीं थी कि कुरआन करीम का आयत इस बारे में उतरेगी।

(सहीह अल्बुख़ारी किताबुश्शहादत, हदीस 2661, भाग 4)

तो यह मामला ख़त्म हुआ और ये आरोप लगते रहे और मुख़्तलिफ़ हरकतें होती रहीं लेकिन इन सब बातों के बावजूद इस रईसुल-मुनाफेकीन के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रहमतुन लिलि आलेमीन का जो सुलूक था वह क्या था? हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि के पिता की जो वफ़ात हुई अर्थात अब्दुल्लाह बिन अबी की तो उन्होंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में अपने पिता की नमाज़ जनाज़ा के लिए दरख़ास्त की। इसी तरह उन्होंने यह भी दरख़ास्त की कि आप अपनी क़मीज़ प्रदान फ़रमाएं ताकि वह बतौर कफ़न अपने पिता के लिए इस्तिमाल कर सके और इस तरह शायद मेरे पिता से कमी हो सके तो आंहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे कुर्ता प्रदान फ़रमाया। एक दूसरी रिवायत में यह भी शब्द मिलते हैं कि जब हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि का पिता अर्थात अब्दुल्लाह बिन उबी बिन सलूल फ़ौत हुआ तो वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और निवेदन किया कि आप अपनी क़मीज़ दें ताकि मैं अपने पिता को इस के द्वारा कफ़न दूं और इस पर नमाज़ जनाज़ा पढ़ें और इस के लिए इस्तिग़फ़ार कर दें तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे अपनी क़मीज़ प्रदान की और फ़रमाया कि जब तुम लोग तजहीज़ तथा तकफ़ीन के मामलों से फ़ारिग़ हो जाओ तो मुझे बुला लेना। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नमाज़ जनाज़ा पढ़ने लगे तो हज़रत उमर रज़ि ने निवेदन किया कि अल्लाह तआला ने आप को मुनाफ़क़ीन की नमाज़ जनाज़ा से मना किया है। फिर रसूलुल्लाह सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया मुझे इख़तियार दिया गया है कि मैं उनके लिए इस्तिग़फ़ार करूँ या ना करूँ। अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई फिर जब अल्लाह तआला ने ऐसे लोगों की नमाज़ जनाज़ा ना पढ़ने की साफ मनाही फ़र्मा दी तो फिर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुनाफ़क़ीन की नमाज़ जनाज़ा पढ़ानी बंद कर दी।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मारफ़ अलासहाब भाग 3 पृष्ठ 941 "अब्दुल्लाह बिन अब्दु-ल्लाह अन्सारी दारुल जैल बेरूत)

यह भी रिवायत है कि जब आप पहुंचे तो इस को क़ब्र में रखा जा चुका था। आप ने बाहर निकलवाया। अपनी टांगों पर इस का सिर रखा और फिर अपना लुआब दहन उस के मुँह में डाला और फिर दुआ की और क़मीज़ कुरता उतार कर के दिया।

(सही बुख़ारी किताबुल जनायज़ बाब हल यख़रज अलमीयत मिनल क़बर हदीस नम्बर1350)

एक रिवायत यह भी है हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि वर्णन करते हैं कि जब बदर की जंग हुई तो काफ़िरों के क़ैदी लाए गए और अब्बास भी लाए गए उन पर कोई कपड़ा ना था। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए कुरता तलाश किया लोगों ने अब्दुल्लाह बिन उबी का कुर्ता उनके लिए ठीक पाया। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने वही उनको पहना दिया और इस वजह से नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अब्दुल्लाह बिन अबी के लिए उस के मरने के बाद अपना कुरता उतार कर उसे दे दिया कि उसे पहनाया जाए।

इब्न एएना कहते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से उसने नेक सुलूक किया था तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने चाहा कि इस से नेक सुलूक फ़रमाएं।

(बुख़ारी किताबुल जिहाद हदीस 3008)

ऐसी रिवायत यद्यपि कि सही बुख़ारी के हवाले से भी है लेकिन यह इतनी authentic सही भी नहीं लगती। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रह-मतुन लिलआलमीन थे। सिर्फ इसी सुलूक की वजह से यह बात या सिर्फ यही बात नहीं हो सकती। एक तो यह है कि कुछ के नज़दीक उस वक़्त बदर की जंग में यह मुस्लमान भी नहीं था और अगर मान लो कि क़मीज़ उतार के दी भी थी तो इस दौरान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस पर बेशुमार एहसानात किए थे। बहरहाल यह दया का सुलूक था जो मेरे ख़्याल में तो हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि की वजह से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किया था कि बेटे ने जो हर मामले में इस्लाम की ग़ैरत रखी ,आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ग़ैरत रखी और अपने ईमान को बचाया और अपने बाप पर सख़्ती भी की तो इसलिए बच्चे की दिलदारी के लिए, बेटे की दिलदारी के लिए या उस की ख़ाहिश की वजह से आप ने यह क़मीज़ उतार के दी थी।

हज़रत उम्र बिन ख़त्ताब रज़ि फ़रमाते हैं कि जब अब्दुल्लाह बिन अबी बिन सलूल मर गया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से दरख़ास्त की गई यह रिवायत हज़रत उम्र रज़ि ने सीधा भी वर्णन फ़रमाया है)कि आप उस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ाऐं। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम खड़े हुए तो मैं आप की तरफ़ लपका और मैंने कहा कि हे अल्लाह के रसूल! क्या आप इब्न अबी का नमाज़ जनाज़ा पढ़ते हैं और उसने तो अमुक दिन यह बात कही थी और अमुक दिन यह बात कही थी। मैं ने बातें गिनवानी शुरू कर दीं। मैं इस के ख़िलाफ़ उस की बातें गिनने लगा। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मुस्कुराए और फ़रमाया उम्र हट जाओ। जब मैंने आप से बहुत बार बार कहा तो आप ने फ़रमाया मुझे तो इख़तियार दिया गया है अत: मैं ने इख़तियार कर लिया है और अगर मैं यह जानों और मुझे यह पता हो कि मैं सत्तर बार से ज़्यादा उस के लिए दुआ मग़्फ़िरत करूँ और वह बख़्शा जाएगा तो मैं ज़रूर इस से भी ज़्यादा करूँ। हज़रत उमर रज़ि कहते हैं अत: रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस की नमाज़ जनाज़ा पढ़ी। फिर आप लौट आए और थोड़ी ही देर गुज़री थी कि सूरह बरा अर्थात सूरह तौब: की ये दो आयतें नाज़िल हुईं कि وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى أَحَدٍ مِّنْهُم مَّاتَ أَبَدًا وَلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖٓ إِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فَاسِقُوْنَ (अत्तौब: 84)अर्थात तू उनमें से किसी की भी जो मर जाए कभी नमाज़ जनाज़ा ना पढ़ और तो इस की क़ब्र पर खड़ा ना हो क्योंकि उन्होंने अल्लाह और इस के रसूल का इनकार किया और वे ऐसी हालत में मर गए कि वे वादा तोड़ने वाले थे। हज़रत उमर रज़ि कहते थे कि इस के बाद मैं ने अपनी हालत पर ताज्जुब किया कि मैं ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने बोलने की यह जुर्रत किस तरह कर ली जो मैंने इस दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने दिखाई थी और अल्लाह और इस का रसूल बेहतर जानते हैं।

(बुख़ारी किताबुल जनायज़ हदीस 1366)

यह हज़रत अब्दुल्लाह रज़ि के ज़िक्र में यह घटना अब ख़त्म हुई। आइन्दा सहाबा का वर्णन होगा जो बाक़ी हैं।

इस समय मैं कुछ वफात पाने वालों का ज़िक्र करूँगा और जुम्अ: के बाद, नमाज़ों के बाद उनका नमाज़ जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा

इस में पहला जो ज़िक्र है वो आदरणीया अमतुल हफ़ीज़ साहिबा का है जो आदरणीय मौलाना मुहम्मद उम्र साहिब केरला इंडिया की पत्नी थीं। 20 अक्तूबर को 72 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

1947 ई में आप केरला में पैदा हुई थीं। मरहूमा के ख़ानदान में अहमिदयत उनके पड़नाना के द्वारा आई थी जो केरला के आरम्भिक अहमदियों में से थे। आपको चन्नई में सैक्रेटरी माल और केरला में लम्बा समय बतौर सदर लजना सेवा की तौफ़ीक़ मिली। क़ुरआन करीम और तहज्जुद की अदायगी में बड़ी बाक़ायदा थीं। लजना और नास्रात को भी क़ुरआन करीम पढ़ाया करती थीं। समस्त फ़र्ज़ी और नफ़ली रोज़े रखती थीं। अपनी ज़िन्दगी के आख़िर तक मौलाना मुहम्मद उम्र साहिब की बहुत सेवा की। बहुत मेहमान नवाज़ और मानव सेवा की भावना से भरी थीं । बड़ी नेक ख़ातून थीं। ख़िलाफ़त के साथ गहिरा अक़ीदत का ताल्लुक़ था। जहां-जहां भी आप रहें मिशन हाऊसज़ में आने वाले लोगों के साथ बहुत इख़लास का सम्बन्ध था। बहुत इख़लास से सेवा क्या करती थीं। वफ़ात से पहले आपको तीन बार हार्ट अटैक हुआ था और तीसरी बार जब हार्ट-अटैक हुआ तो आपने मौलवी उम्र साहिब को बताया कि मेरी वफ़ात का वक़्त नज़दीक आ चुका है और इस के बाद कहा कि मेरा सलाम सबको पहुंचा दें। फिर ऊंची आवाज़ में अल्लाहो अकबर तीन बार कहा और इस तरह फिर आप अल्लाह के हुज़ूर हाज़िर हो गईं

मरहूमा मूसिया थीं। पीछे रहने वालों में चार बेटियां शामिल हैं। आप मुनव्वर अहमद साहिब नासिर की सास थीं जो दफ़्तर पी ऐस में हमारी तामिल डाक के सिलसिले में वालंटेयर के तौर पर सेवा कर रहे हैं।

आदरणीय मौलवी मुहम्मद उम्र साहिब लिखते हैं कि 1961 ई में जब मैंने मौलवी फ़ाज़िल का इमतिहान पास कर लिया तो मेरी पहली तक़र्रुरी मदरसतुल अहमिदया में पढ़ाने पर हुई। फिर हैदराबाद में हो गई और इस दौरान वहां पर एक हादिसा भी पेश आया।1967 ी में हैदराबाद में बहुत बारिश के बाद जुबली हाल जिसकी पहली मंज़िल पर prayer hall और दफ़्तर बने हुए थे उस की दूसरी मंज़िल लजना इमा उल्लाह के लिए मख़सूस थी और तीसरी मंज़िल में मिशन हाऊस स्थित था, का बेशतर हिस्सा इस बारिश की वजह से एकदम गिर गया। कहते हैं उस वक़्त ख़ाकसार वहां मौजूद नहीं था । जब दोपहर मिशन हाऊस पहुंचा तो यह देखकर हैरान रह गया कि वह सारी इमारत गिर चुकी है। सिर्फ एक छोटा सा कोना खड़ा था और ख़ाकसार की पत्नी तीन माह की बच्ची गोद में लेकर तीसरी मंज़िल के कोने में बेसहारा खड़ी थी। इस सूरत में मेरी पत्नी और बच्ची का बच जाना जाहिर में बहुत मुश्किल था। बहरहाल कहते हैं कि जहां वह खड़ी थीं उस के नीचे बड़ी गहराई में बिल्डिंग का मलबा था। नीचे कूद नहीं सकती थीं। नीचे उतरने की कोई सूरत नज़र नहीं आ रही थी। फ़ायर ब्रिगेड की तरफ़ से एक सीढ़ी लाई गई लेकिन किसी को हिम्मत नहीं हो रही थी कि सीढ़ी चढ़ कर माँ और बच्ची को बचाया जाए। इस वक़्त एक फ़ायर मैन ने जो एक बड़ी उम्र का शख़्स था उसने कहा अगर मुझे अपनी जान भी देनी पड़े तो मैं माँ और बच्ची को बचाने की कोशिश करूँगा। फिर उस बड़ी उम्र के फ़ायर मैन ने सीढ़ी पर चढ़ कर पहले बच्ची को और इस के बाद माँ को नीचे उतारा। बहरहाल कहते हैं इस तरह मोजज़ाना तौर पर दोनों की जानें बच गईं। कहते हैं बड़े सब्र से हर जगह उन्होंने मेरा साथ दिया। कहते हैं जब मेरा तक़र्रुर केरला में हुआ तो वहां केरला में भी यह पंद्रह साल तक सुबाई सदर लजना इमा उल्लाह केरला रहीं और बड़े अहसन रंग में अपनी ख़िदमात दें। 2007 ई से लेकर 2014 ई तक जब यह नाज़िर इस्लाह इरशाद थे तो कादियान में रही हैं। इस दौरान हर-रोज़ बैयतुद्दुआ में जा कर लंबी दुआएं क्या करती थीं। फिर 2015 ी में इन को उमरे की सआदत भी मिली। उम्र साहिब लिखते हैं कि रोज़ाना नमाज़े फ़जर अदा करने के बाद क़ुरआन मजीद की तिलावत करती थीं। हदीस का अध्यनन करती थीं। यह उनका रोज़ का काम था और जिस दिन उनकी वफ़ात हुई है इस दिन भी इस पर अमल करने की अल्लाह तआला ने तौफ़ीक़ बख़शी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिसस्लाम की किताबों के अध्ययन का भी शौक़ रखती थीं। इस के इलावा मालूमाते आम्मा हासिल करने में भी ख़ासी दिलचस्पी रखती थीं और यही एक मुरब्बी की बीवी की विशेषताएं होनी चाहिऐं जो अल्लाह तआला के फ़ज़ल से उनमें मौजूद थीं। मुरब्बियों और ओहदेदारान के बड़े मुक़ाम तथा मर्तबा को समझते हुए उनकी इज़्ज़त तथा एहतिराम करने वाली औरत थीं। मेहमानों की मेहमान-नवाज़ी में किसी किस्म की कमी नहीं आने देती थीं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे और उनकी औलाद को उनकी दुआओं का वारिस बनाए।

दूसरा जनाज़ा आदरणीय चौधरी मुहम्मद इब्राहीम साहिब का है जो मासिक अन्सारुल्लाह पाकिस्तान के भूतपूर्व मैनेजर और पब्लिशर थे। यह16 अक्तूबर को 83 साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

1957 ई में उनकी तक़र्रुरी बतौर सैक्रेटरी अन्सारुल्लाह मर्कज़िया पाकिस्तान

रब्वह हुई। 1960 ई में जब मासिक अंसारुल्लाह का आरम्भ हुआ तो आपको उस का मैनेजर और पब्लिशर मुक़र्रर किया गया और 2004 ई तक बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से यह कर्तव्य अदा दिए। अंसारुल्लाह पाकिस्तान में उनको ऑफ़िस सुपरेटंडनट, नायब क़ाइद उमूमी, सैक्रेटरी बराए सदर मज्लिस ख़िदमतों की तौफ़ीक़ मिली। 2003 ई में उनको एक मुक़द्दमे में इश्तिहारी क़रार दिया गया और फिर यह मेरी इजाज़त से यहां लंदन आ गए और यहीं शिफ़्ट हो गए थे। यहां आकर भी आपको अंसारुल्लाह में लगभग आठ नौ साल सेवा की तौफ़ीक़ मिली और नेशनल मज्लिस आमला के रुकन भी रहे। मरहूम मूसी थे। वफ़ात से कुछ देर पहले अपनी बीमारी की वजह से रब्वह चले गए थे। वहीं उनकी वफ़ात हुई। पीछे रहने वालों में एक बेटी और पाँच बेटे और कई पोते पोतिया हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और उनकी औलाद को और उनकी नस्ल को भी उनकी नेकियां जारी रखने और जमाअत और ख़िलाफ़त से सम्बन्ध रखने की तौफ़ीक़ फ़रमाए।

पाकिस्तान में जब अन्सारुल्लाह के मैनेजर थे तो हर बात पर उन पर मुक़द्दमा हो जाता है। लगभग 26 मुक़द्दमे बने थे और एक माह तक आप अल्लाह के लिए कैद भी रहे।

तीसरा जनाज़ा आदरणीय राजा मसऊद अहमद साहिब का है जो आदरणीय राजा मुहम्मद नवाज़ साहिब मरहूम पिंडदादन ख़ान के बेटे थे। 19 अक्तूबर को बड़ी लम्बी बीमारी के बाद 69 साल की उम्र में उनकी वफ़ात हुई। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैहि राजेऊन।

उनके ख़ानदान में अहमदियत जो है वह उनके पिता साहिब के द्वारा आई थी। राजा मुहम्मद अली साहिब उस ज़माने में 1944-1943 में नाज़िर बैयतुल माल होते थे उनके साथ उनके पिता का सम्बन्ध था वह उनको कादियान जलसा पर ले के गए और वहां उन्होंने बैअत की और बैअत भी सिर्फ इस तरह कि कोई दलील इत्यादि नहीं बल्कि एक घटना पेश आई कि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्हो जलसा पर तक़रीर फ़र्मा रहे थे तो इस दौरान में कहते हैं कि मैंने देखा कि एक ख़ूबसूरत, ख़ूबरू नौजवान एक मैले कुचैले बच्चे को गोद में उठाए ले के आया है और जब बच्चे का नाक बह रहा था तो उस वक़्त अपनी जेब से रूमाल निकाला और इस का नाक साफ़ किया और पीछे खड़ा रहा। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि तक़रीर में व्यस्त थे। थोड़ी देर के बाद जब बच्चा रोया तो फिर हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने पीछे मुड़ कर देखा तो ऐलान किया कि किसी का गुम हुआ बचा है तो माता पिता ले जाएं। बहरहाल कहते हैं कि जब मैंने पता किया कि साफ़ सुथरे कपड़ों में यह नौजवान कौन था और बच्चा मेला कुचैला तो उन्होंने बताया कि यह हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहब हैं। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सानी रज़ि के बड़े बेटे और इस वक़्त ख़ुद्दामुल अहमदिया के शायद सदर भी हैं। बहरहाल कहते हैं कि इस से मुझे इतना असर हुआ कि बाक़ी मस्ले तो बाद की बात है। जो नमूना आज मैंने देखा है सिर्फ इसी बात पर मैं बैअत करता हूँ। तो जलसों पर आने वाले कुछ लोग हमेशा से ही इन नमूनों को देखकर बैअत कर के सिलसिला अहमदिया में भी शामिल हैं।

बहरहाल राजा साहिब1991 ई में यू के आ गए थे और यहां कीट फ़ोर्ड जमाअत के पहले सदर मुक़र्रर हुए और अपना घर भी जमाअत सैंटर के तौर पर इस्तिमाल किया। यहां आ कर क़ाइद उमूमी अन्सारुल्लाह, ऐडीशनल सैक्रेटरी वसाया और फिर नैशनल सैक्रेटरी वसाया के तौर पर उनको सेवा की तौफ़ीक़ मिली और जब मैंने वसीयत के निज़ाम को बेहतर करने के लिए कहा तो उन्होंने काफ़ी मेहनत की और अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मोसियान के इस निज़ाम को मुनज़्ज़म किया। ख़िलाफ़त के साथ बड़ा गहरा ताल्लुक़ था। जमअत के ओहदेदारों का सम्मान भी करते थे। नमाज़ पढ़ने वाले, तहज्जुद अदा करने वाले थे। चंदे बड़े खुले दिल से देते थे। सदक़ा तथा ख़ैरात करने वाले थे। ग़रीबों का ध्यान रखने वाले थे। मिलनसार थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आप मूसी भी थे। पत्नी के इलावा एक बेटी और दो बेटे उनके पीछे रहने वालों में शामिल हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे। मेरे साथ कॉलेज में एक क्लास में तो नहीं थे। उनके विषय अलग थे लेकिन बहरहाल मेरे वक़्त में कॉलेज में थे और इस तरह उनसे वहां से परिचय भी था। इस लिहाज़ से हम कह सकते हैं कि हम कॉलेज में एक ही क्लास में इकट्ठे पढ़ते रहे। एक उर्दू की क्लास थी। वह साझी हुआ करती थी तो बहरहाल हम इकट्ठे ही बैठते रहे। इस वक़्त भी उनमें बड़ी ख़ूबियां थीं जो मैंने देखीं और अपने काम से काम रखने वाले थे। ना कोई शरारत जैसे लड़कों में शरारत होती है और ना किसी को तंग करना। अल्लाह तआला उनके दर्जात बनलन्द फ़रमाए।

अल्लाह बख़श सादिक़ साहिब वकीलुल तालीम रब्वह हैं। उनके बारे में लिखते हैं कि बड़े दिलेर और ग़ैरत वाले अहमदी थे। जेहलम शहर की मस्जिद बहुत पुरानी थी। छतें भी नीची थीं। इस के कमरों का फ़र्श कहीं नीचा और कहीं ऊंचा था। 1984ई के बाद हालात ख़राब थे। इस क़ानून के बाद जमाअत की मस्जिद बनाई भी नहीं जा सकतीं और मुरम्मत भी नहीं की जा सकतीं लेकिन राजा साहिब ने बड़ी जुर्रत से मस्जिद की तामीर का काम अपने ज़िम्मा लिया और बड़ी अक़लमंदी से अमीर साहिब के मश्वरे से इस काम को इंतिहा तक पहुंचाया, अंजाम तक पहुंचाया और सड़क की तरफ़ दीवारों को छेड़े बग़ैर नक़्शे के मुताबिक़ हाल के सतून बनाए और फिर बड़ी हिक्मत से उस पर छत डाली और इस तरह उन्होंने ख़ुद भी बड़ी क़ुर्बानी की। माली क़ुर्बानी भी की, वक़्त की क़ुर्बानी भी की, लोगों को भी तहरीक की और इस तरह मस्जिद को बिलकुल नए रंग में तबदील कर दिया और लिंटल lintel) डाल के कमरों की दीवारें बाद में निकाल दी गईं। अब ख़ुदा के फ़ज़ल से ऊपर नीचे मस्जिद के दो हाल तैयार हो गए।

चौथा जनाज़ा जो है वो आदरणीया सालहा अनवर उबड़ो साहिबा का है जो अनवर अली उबड़ो साहिब मरहूम सिंध की पत्नी थीं। यह यक्म अक्तूबर को वफ़ात पा गई थीं। इन्नअ लिल्लाह-ए-वइन्नअ इले रअजिअऊओ़न

बड़ी दिलेर और हिम्मत वाली, इबादत करने वाली, हुक़ूक़ुल्लाह और हुक़ूक़ुल ईबाद अदा करने वाली औरत थीं। बचपन से ही नमाज़ रोज़ा की पाबंद थीं और चंदा इत्यादि देने वाली थीं। ख़िलाफ़त से बड़ा सच्चा सम्बन्ध था। आपके पिता ईरान से रिटायरमैंट लेकर जब नवाब शाह आकर आबाद हुए तो उस वक़्त आपको जो मामूली जेब ख़र्च मिलता था इस पर चंदा अदा करती थीं। एक बार लजना की एक मर्कज़ी ओहदेदार वहां गईं और इजलास में खड़े हो कर सारी लजना को बताया कि पूरे नवाब शाह की लजना में सबसे ज़्यादा चंदा इस बच्ची का आता है और यह आपकी शादी से पहले का घटना है। आपकी बेटी ताहिरा मोमिन कहती हैं कि शादी के बाद अल्लाह के जितने बेशुमार फ़ज़ल हुए इतना ही अल्लाह तआला ने उन्हें बड़ा दिल भी दिया। बहुत ग़रीबों का ध्यान रखने वाली और विनम्र और विनय स्वभाव वाली थीं। चंदे की हर तहरीक पर लब्बैक कहने वाली थीं। सबसे ज़्यादा वादा लिखवाती थीं। लंबा समय लजना ज़िला लाड़काना की सदर रहीं। जब भी दौरे करतीं चंदे की तहरीक करतीं तो बड़ा अच्छा रद्द अमल होता क्योंकि उनका अपना नमूना नेक था। बहुत दिलेर और ग़ैरत मंद थीं। सिंध के इस वक़्त के ग़ैर तहज़ीब वाले माहौल में ब्याह के गई हैं तो बिलकुल सिंधी ख़ानदान में रस्मों और बिद्दतों से बहुत दूर रह कर, सोशल लाईफ़ गुज़ारी है और हर एक से सम्बन्ध भी रखा और दिल से रखा और रिश्ते दारियां भी बड़े अहसन रंग में निभाएँ। ससुराली रिश्ते दारियां भी बड़ी अहसन रंग में निभाएँ। उनकी बेटी लिखती हैं कि अब भी लजना की मैंबर जहां-जहां भी रहती हैं उन्हें बहुत याद करती हैं। कहती थीं कि जब भी हमको परेशानी होती उनको कहते। पहले तो वह हमें कहतीं नमाज़ पढ़ो और दुआ की नसीहत करतीं और फिर ख़ुद भी हमारे लिए बहुत दुआएं करतीं। बड़ा अच्छा सम्बन्ध रखा सब के साथ रखा और बड़ी सोशल थीं। जहां भी जातीं अपना दिल लगा लेतीं। अपना हलक़ा अहबाब वसीअ करतीं। अल्लाह तआला उनके बच्चों में भी इख़लास तथा वफ़ा पैदा करे। उनके साथ मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए और बच्चे भी ख़िलाफ़त से और जमाअत से इसी तरह जुड़े रहें और क़ुर्बानियां करने वाले हों जिस तरह यह ख़ुद करती रहीं। अल्लाह तआला उनकी दुआएं भी उनके बच्चों के हक़ में क़बूल फ़रमाए। उनके दो बेटे और दो बेटियां हैं।

नमाज़ों के बाद जैसा कि मैं ने कहा इन सबकी नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 06 दिसम्बर 2019 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆

☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

ख़ुत्बः जुमअः

हम तो आप के दाएं भी लड़ेंगे बाएं भी और आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी

जंग बदर में अल्लाह तआला की राह में जंग करने वाले पहले घुड़सवार होने का शरफ़ आप को हासिल हुआ

इख़लास तथा वफ़ा के पैकर बदरी सहाबी , रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीर-अंदाज़ हज़रत मिक़दाद बिन असवद रज़ि की सीरत मुबारका का वर्णन

किसी आज़माईश की और सख़्ती की दुआ नहीं करनी चाहिए ना इच्छा करनी चाहिए लेकिन अगर इबतिला आ जाए, इमतिहान आ जाए तो फिर सब्र दिखाना चाहिए।

हमारे सब अफ़िसरों को भी यह हमेशा याद रखना चाहिए कि पहले तो इच्छा नहीं करनी और जब अफ़्सर बनाया जाए, ओहदा दिया जाए तो अल्लाह तआला से इस ओहदे की बुराई से बचने की भी दुआ मांगनी चाहिए और अल्लाह तआला कभी गर्व पैदा ना करे और इस का फ़ज़ल माँगना चाहिए।

अल्लाह तआला हमें भी इस्लाम की हक़ीक़त को समझने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम की उम्मत में होने का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और अपने अन्दर भय भी पैदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 22 नवम्बर 2019 ई. स्थान - मस्जिद 'बैयतुल फुतूह मोर्डन सिर्रे (यू. के)

बदरी सहाबा के ज़िक्र में आज मैं हज़रत मिक़दाद बिन अस्वद या मिक़दाद बिन अमरो रज़ि का ज़िक्र करूँगा। उनका असल नाम मिक़दाद बिन अमरो रज़ि है हज़रत मिक़दाद के पिता का नाम अमरो बिन सअलब: था जो बनी वहरा से थे। अलबत्ता हज़रत मिक़दाद को अस्वद बिन यग़ूस की तरफ़ मंसूब किया जाता है क्योंकि उसने उन्हें बचपन में अपना मुतबन्ना(दत्तक पुत्र) बना लिया था । इसलिए मिक़दाद बिन असवद रज़ि के नाम से प्रसिद्ध हो गए।

(सुनन अत्तिरमज़ी किताबुल ज़हद बाब मा जाअ फ़ी करअितल मद्दाहीन हदीस 2393)

(इब्न हश्शाम पृष्ठ 151 बाब ज़िक्र हिजर ऊला इला अर्ज़िल हबश प्रकाशक दार इब्न हज़म 2009 ई)

हज़रत मिक़दाद के पिता अमरो बिन सअलब: क़बीला बहरा सम्बन्ध रखते थे जो यमन के इलाक़े में क़ुज़ाह का एक क़बीला था। ज़माना जाहिलियत में उनके पिता अमरो के हाथों किसी का क़तल हो गया जिस वजह से वह भाग कर हज़े मौत, जो समुन्द्र के किनारे अदन के पूर्वी तरफ यमन में एक इलाक़ा है वहां चले गए और वहां किनदह क़बीले के हलीफ़ (सहयोगी) बन गए जिस कारण से किनदी कहिलाए जाने लगे। वहां एक औरत से अमरो ने शादी कर ली जिस से हज़रत मकदाद रज़ि पैदा हुए। जब मकदाद रज़ि बड़े हुए तो उनका अब्बू शिम्र बिन हिज्र किन्दी से झगड़ा हो गया। उन्होंने शिम्र की टांग तलवार से काट दी और फिर मक्का भाग आए और असवद बिन अबदे यग़ूस के हलीफ़ बन गए। मकदाद रज़ि ने अपने पिता को ख़त लिखा तो वह भी फिर मक्का आ गए। अस्वद ने मिक़दाद को अपना मुतबन्ना (दत्तक पुत्र) बना लिया था जिस वजह से उनको मिक़दाद बिन अस्वद भी कहा जाने लगा और प्राय इसी नाम से मशहूर हो गए लेकिन जब आयत اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ (अलअहज़ाब 6) अर्थात उनको, बच्चों को, ले पालकों को भी उनके बापों के नाम से पुकारो तो उन्हें मिक़दाद बिन अमरो कहा जाने लगा लेकिन प्रसद्धि मिक़दाद बिन अस्वद के नाम से थी। बहरहाल अल्लाह तआला का यही हुक्म है कि اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ कि लय पालकों को भी और जो किसी के साथ मंसूब हैं, असल नसब जो है वह बाप का है इसलिए बाप से पुकारा जाना चाहिए। हज़रत मकदाद रज़ि की कुनिय्यत अबू मअबद के इलावा अब्बू अस्वद, अब्बू उम्र और अबू सईद भी वर्णन की जाती है।

एक बार हज़रत मकदाद रज़ि और हज़रत अबदुर्ररहिमान बिन औफ रज़ि बैठे हुए थे। हज़रत अब्दुल रहमान रज़ि ने पूछा कि तुम शादी क्यों नहीं करते? हज़रत मकदाद रज़ि ने कहा कि आप मुझ से पूछ रहे हैं तो फिर अपनी बेटी की शादी मुझ से कर दें। इस पर हज़रत अब्दुल रहमान रज़ि गुस्से में आ गए और उन्हें डाँट दिया। हज़रत मकदाद रज़ि ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम से इस बात की शिकायत की तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं तुम्हारी शादी करवाता हूँ। इस के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने अपने चाचा हज़रत ज़ुबैर बिन अब्दुल मुतलिब की बेटी ज़बाअत से उनकी शादी करवा दी

(शरह अज़्ज़रकानी भाग 5 पृष्ठ 213 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1996 ई)(मोअज्जमुल बुलदान भाग 2 पृष्ठ 311 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत) (इब्न हश्शाम पृष्ठ 151 बाब ज़िक्र हिजरतुल औला इला अर्ज़ हबशा प्रकाशक दार इब्न हज़म 2009 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 85 मिक़दाद बिन अमरो दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)(अलअसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 6 पृष्ठ 160 अल मिक़दाद बिन अलअसवद दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2005 ई)

हज़रत ज़ुबआन हज़रत ज़ुबेर रज़ि और आतिका पुत्री अबी वह्ब की बेटी थीं और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने उनकी शादी हज़रत मिक़दाद से जब करवाई तो उनके हाँ औलाद हुई। उनके दो बच्चे पैदा हुए करीमा और अब्दुल्लाह। अब्दुल्लाह जंगे जमल में हज़रत आईशा की तरफ़ से लड़ते हुए शहीद हुए थे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने ज़बाइ को ख़ैबर में से चालीस वसक खजूरें प्रदान की थीं।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 8 फ़ीन्निसा ज़िक्र बनात अमूम रसूलुल्लाह पृष्ठ 38 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 1990 ई)

और यह लगभघ डेढ़ सौ मन या कह लें कि छ: हज़ार किलो के क़रीब बनता है।

(लुग़ातुल हदीस भाग 4 पृष्ठ 487 ''वसक'' लुग़ातुल हदीस भाग 2 पृष्ठ 648 ''साअ''

हज़रत मकदाद रज़ि के एक बेटे का नाम मअबद भी था।

(अलअसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 6 पृष्ठ 207 मअबद बिन मिक़दाद, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2005 ई)

हज़रत मिक़दाद की बेटी करीमा आप का हुल्या वर्णन करती हैं कि उनका क़द लम्बा और रंग गंदुमी था। पेट बड़ा और सिर में बहुत अधिक बाल थे। वह अपनी दाढ़ी को लाल रंग लगाया करते थे जो ख़ूबसूरत थी। ना बड़ी थी और ना छोटी थी। आँखें काली थीं और भवें बारीक और लम्बी थीं।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 87 दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

हज़रत मकदाद रज़ि के क़बूल इस्लाम की घटना इस तरह है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत मकदाद रज़ि इन सात सहाबा में से थे जिन्होंने मक्का में अपने इस्लाम का सबसे पहले इज़हार किया था।

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तुल सहाबा भाग 5 पृष्ठ 243 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2008 ई)

इस का विस्तार पहले मैं हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ि के अन्तर्गत वर्णन कर चुका हूँ। हज़रत मकदाद रज़ि की मदीना की तरफ़ हिज्रत के बारे में आता है कि हब्शा की तरफ़ हिज्रत करने वाले मुस्लमानों में हज़रत मकदाद रज़ि भी शामिल थे। कुछ समय बाद मिकदाद वापस आ गए। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम हिज्रत कर के मदीना तशरीफ़ ले गए तो उस वक़्त हज़रत मकदाद रज़ि हिज्रत ना कर सके। फिर वह मक्का में उस वक़्त तक रहे जब तक कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अलैहि वसल्लम ने हज़रत उबैदह बिन हारिस रज़ि की सरकर्दगी में एक लश्कर भेजा। हज़रत मकदाद रज़ि और हज़रत उत्बह बिन ग़ज़वान इक्रिमा बिन अबू जहल की

कमान में इस उद्देश्य से लश्कर में शामिल हुए थे कि वे दोनों मौक़ा पा कर मुस्लमानों से जा मिलेंगे

(असदुल ग़ाबह फ़ी मारफ़तुल सहाबा भाग 5 पृष्ठ 242 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2008 ई)

इस की तफ़सील भी मैं पहले वर्णन कर चुका हूँ। थोड़ा सा संक्षिप्त जो हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने सीरत ख़ातिमुन्निबय्यीन में लिखी है वह कुछ वर्णन कर देता हूँ। वह इस तरह है कि

''जंग वद्दान से वापस आने पर रबीुल अव्वल महीना के शुरू में आप ने अपने एक क़रीबी रिश्तेदार उबैदह बिन अल हारिस मुत्तलबी की इमारत में साठ ऊंठ सवार मुहाजिरीन का एक दस्ता रवाना फ़रमाया। इस मुहिम का उद्देश्य भी मक्का के क़ुरैश हमलों की पेशबंदी थी।''उनको रोकना था '' अत: जब उबैदह बिन हारिस और उन के साथी कुछ दूरी तय करके सनी्यतुल मर्रत के पास पहुंचे तो अचानक क्या देखते हैं कि क़ुरैश के दो सौ हथियार लगाए नौजवान इक्रिमा बिन अबुजहल की कमान में डेरा डाले पड़े हैं। दोनों पक्ष एक दूसरे के सामने हुए और एक दूसरे के मुक़ाबले में कुछ तीर-अंदाज़ी भी हुई लेकिन फिर मुशरिकीन का गिरोह यह ख़ौफ़ खा कर कि मुस्लमानों के पीछे कुछ कुमक छुपी होगी।' कुछ कुमक छिपी हुई होगी ''उनके मुक़ाबला से पीछे हट गया और मुस्लमानों ने उनका पीछा नहीं किया। अलबत्ता मुशरिकीन के लश्कर में से दो आदमी मिकदाद बिन अमरो और उत्बह् बिन ग़ज़वान, इकरम: बिन अबुजहल की कमान से ख़ुद बख़ुद भाग कर मुस्लमानों के साथ आ मिले और लिखा है कि वे इसी उद्देश्य से क़ुरैश के साथ निकले थे कि अवसर पाकर मुस्लमानों में आ मिलें क्योंकि वे दिल से मुस्लमान थे मगर अपनी कमज़ोरी के कारण के क़ुरैश से डरते हुए हिज्रत नहीं कर सकते थे और मुम्किन है कि इसी घटना ने क़ुरैश को बद-दिल कर दिया हो और उन्होंने उसे बुरा फ़ाल समझ कर पीछे हट जाने का फ़ैसला कर लिया हो। इतिहास में यह वर्णन नहीं है कि क़ुरैश का यह लश्कर जो यक़ीनन कोई व्यापारिक क़ाफ़िला नहीं था और जिसके बारे में इब्न इसहाक़ ने जमउन अज़ीम (अर्थात एक बड़ा लश्कर) के शब्द प्रयोग किए हैं किसी ख़ास इरादा से इस तरफ़ आया था लेकिन यह यक़ीनी है कि उनकी नीयत अच्छी नहीं थी और यह ख़ुदा का फ़ज़ल था कि मुस्लमानों को चौकस पा कर और अपने आदमियों में से कुछ को मुस्लमानों की तरफ़ जाता देखकर उनको हिम्मत नहीं हुई और वह वापस लौट गए और सहाबा क़ो इस मुहिम का यह लाभ हो गया कि दो मुस्लमान रूहें क़ुरैश के ज़ुलम से नजात पा गईं।'

(सीरत ख़ातमुन्निबय्यीन पृष्ठ 328-329)

मदीना हिज्रत के वक़्त हज़रत मिक़दाद बिन असवद रज़ि हज़रत कुलसूम बिन हिदम के घर ठहरे। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मकदाद रज़ि और हज़रत जब्बार बिन सख़र के बीच में भाईचारा स्थापित किया। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मकदाद रज़ि को बनू हुदैल:, अन्सार के क़बीला ख़ज़रज की एक शाख़ है उनके मुहल्ले में रिहायश के लिए जगह प्रदान फ़रमाई थी। हज़रत उबै बिन कअब ने उन्हें इस मुहल्ले में रहने की दावत दी थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 86 दारे अहया अत्तुरास बेरूत लबनान 1996 ई)

हदीसों में रात को बकरी का दूध पीने की जो एक घटना वर्णन होती है और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए तीन आदमी जो दूध रखते थे उस का सम्बन्ध हज़रत मकदाद रज़ि से ही है। वह दूध भी एक सहाबी पी गए।

हज़रत मिकदाद रज़ि यह रिवायत करते हैं, वह कहते हैं कि मैं और मेरे दो साथी मदीना हिज्रत कर के आए और हमारे कान और आँखें काम के कारण से प्रभावित हो गई थीं। हम अपने आपको रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा रज़ि पर पेश करने लगे कि किसी के साथ ठहर जाएं मगर किसी ने हमें क़बूल ना किया तो हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए। आप हमें अपने घर ले गए तो वहां तीन बकरियां थीं। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया उनका दूध हम सब के लिए दूह लिया करो। वह कहते हैं कि हम दूध दोहते और हम में से हर शख़्स अपना हिस्सा पी लेता और हम नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए आप का हिस्सा रख देते। वह कहते हैं कि रात आप तशरीफ़ लाते और इतनी आवाज़ में अस्सलामु अलैकुम कहते कि सोने वाला बेदार ना हो और जो जाग रहा हो वह सुन ले। कहते हैं कि फिर आप मस्जिद तशरीफ़ ले जाते और नमाज़ पढ़ते। फिर अपने हिस्से का दूध लेते और पीते। कहते हैं कि एक रात मेरे पास शैतान आया जबकि में अपना हिस्सा पी चुका था अर्थात शैतानी ख़्याल मेरे दिल में आया। उसने कहा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अन्सार के पास जाते हैं और अन्सार आप को तोहफ़ा पेश करते हैं। आप को इस घूँट की अर्थात थोड़े से दूध की जो आप के हिस्से का रखा हुआ था कोई ज़रूरत नहीं है। अत: कहते हैं मैंने वह हिस्सा जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए रखा हुआ था वह लेकर पी लिया। जब वह मेरे पेट में चला गया, अरबों का वर्णन करने का अपना एक तरीक़ा है। कहते हैं मेरे पेट में चला गया, मैं जान गया कि अब उस के हुसूल की कोई राह नहीं। बस यह अब वापस नहीं आ सकता तो कहते हैं कि शैतान ने मुझे शर्मिन्दा किया और कहा कि तेरा बुरा हो यह तूने क्या-किया तूने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हिस्से का दूध पी लिया है। वह तशरीफ़ लाएँगे और उसे ना पाएँगे तो वह तेरे ख़िलाफ़ दुआ करेंगे और तू हलाक हो जाएगा और तेरी दुनिया तथा आख़िरत तबाह हो जाएगी। शैतान ने लज्जित क्यों किया? हज़रत मकदाद रज़ि ने यह वाक्य क्यों बोला? इसलिए कि शैतान ने यह शंका आपके दिल में डाली कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप के लिए बददुआ करेंगे हालाँकि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो रहमतुल लिलआलेमीन हैं। इस छोटी सी बात पर उन्होंने क्यों दुआ करनी थी। तो यह ख़्याल भी शैतानी था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तुम्हारे लिए बददुआ करेंगे। बहरहाल कहते हैं यह ख़्याल मेरे दिल में आया कि दुआ करेंगे तो मैं हलाक हो जाऊँगा और दुनिया ता आख़िरत तबाह हो जाएगी। कहते हैं कि मेरे ऊपर एक चादर थी जब मैं उसे अपने पांव पर डालता तो मेरा सिर बाहर रह जाता और जब सिर पर डालता तो मेरे पांव बाहर निकल जाते और मुझे नींद ना आती थी। मेरे दोनों साथी तो सो गए थे। उन्होंने वह नहीं किया था जो मैंने किया था अर्थात वह दूध पी लिया था। कहते हैं कि फिर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए। आप ने अस्सलामु अलैकुम कहा जैसे कहा करते थे। फिर मस्जिद गए और नमाज़ पढ़ी अर्थात नफ़ल पढ़े। फिर अपने पीने की चीज़ की तरफ़ आए। दूध का जो गिलास रखा हुआ था उस की तरफ़ आए। इस का ढकना उठाया तो इस में कुछ भी नहीं था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आसमान की तरफ़ सिर उठाया। कहते हैं मैं जाग रहा था। सब कुछ देख रहा था। मुझे ख़्याल आया कि अब आप मेरे ख़िलाफ़ दुआ करेंगे। अरथात मुझे बददुआ देंगे और मैं हलाक हो जाऊँगा। लेकिन आप ने फ़रमाया कि

اَللّٰهُمَّ أَطْعِمْ مَنْ أَطْعَمَنِيْ وَأَسْقِ مَنْ أَسْقَانِيْ

अर्थात हे अल्लाह जो मुझे खिलाए उस को तो खिला और जो मुझे पिलाए तो इस को पिला। कहते हैं कि यह सुनकर मैं ने अपनी चादर ली। अपने ऊपर मज़बूती से उसे बाँधा। जाग तो मैं रहा था और छुरी लेकर बाहर गया कि यह जो बाहर बकरियां खड़ी हैं उनमें से जो सबसे अच्छी, मोटी, सेहत मंद बकरी है इस की तरफ़ चल पड़ा कि उसे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए ज़िबह करूँ। कहते हैं जब मैं वहां पहुंचा तो मैंने देखा कि इस के थन दूध से भरे हुए हैं बल्कि इन सब के थन दूध से भरे हुए थे अर्थात सारी बकरियों के। फिर मैं हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर वालों का एक बर्तन लाया। उनको ख़्याल भी ना होता था कि इस में दूध दूह कर उस को भरेंगे। कहते हैं कि मैंने इस में दूध दोहा यहां तक कि इस के ऊपर तक झाग आ गई, बर्तन पूरा भर गया। मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। आप ने फ़रमाया क्या तुम लोगों ने आज रात अपने हिस्से का दूध पी लिया था? वह कहते हैं मैं ने कहा हे रसूलुल्लाह यह ना पूछें आप। आप यह दूध पिएं। आप ने पिया फिर मुझे दे दिया । मैंने निवेदन किया हे रसूलुल्लाह और पिएं। आप ने फिर पिया। फिर मुझे दे दिया। जब मुझे महसूस हुआ कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तृप्त हो गए हैं, आप का पेट भर गया है। जितनी आप की ख़ुराक थी इतना दूध आप ने पी लिया है और यह भी मुझे ख़्याल आया कि मैंने अब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दुआ भी ले ली है । यही दुआ की थी नाँ कि अल्लाह जो मुझे पिलाए उस को पिला और जो मुझे खिलाए उस को खिला। कहते हैं अब दूध भी पिला दिया था और मैं ने दुआ भी ले ली

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

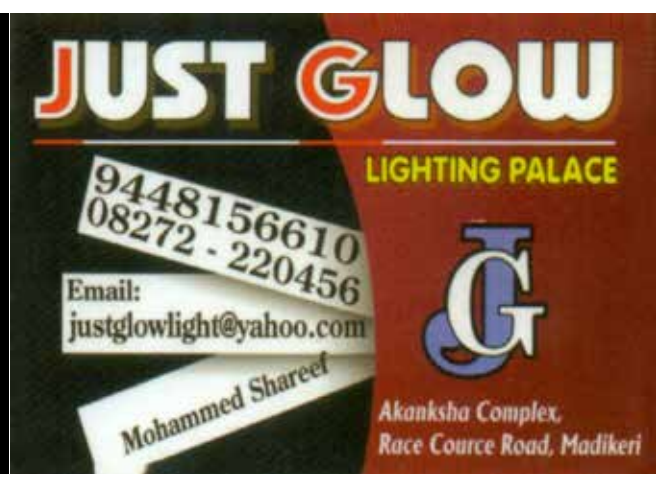

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

तो मैं हंस पड़ा और मैं इतना हिंसा कि बे-इख़्तियार ज़मीन पर जा गिरा। अर्थात यहां तक कि हंसी से लौट-पोट हो गया। कहते हैं कि जब आप ने मुझे हंसते देखा तो इस पर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। हे मिक़दाद तेरी कोई शरारत है। आप ने फ़रमाया मुझे लगता है तुम ने कोई शरारत की है। मैंने अर्ज़ क्या या रसूलुल्लाह मेरे साथ यूं हुआ है, और मैंने यह किया था सारा क़िस्सा सुना दिया। नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला की तरफ़ से रहमत है। यह बात तूने मुझे पहले क्यों नहीं बताई ताकि हम अपने दोनों साथियों को जगा लेते वे भी इस से पीते। रहमत से हिस्सा पाते। कहते हैं मैंने कहा उस की क़सम जिसने आप को हक़ के साथ मबऊस किया है जब आप ने वह रहमत पा ली और आप के साथ में ने भी वह रहमत पा ली तो अब मुझे कोई पर्वा नहीं कि लोगों में से कौन इसे हासिल करता है। मुझे तो अपनी फ़िक्र थी क्योंकि मैंने ही वह जुर्म किया था।

(सही मुस्लिम किताबुल अशरबा बाब इकरामुल ज़ैफ़ वफ़ज़ल उसारा हदीस 2055)

हज़रत मकदाद रज़ि ने जंगे बदर, उहद और ख़ंदक़ सहित सारी जंगों में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ शिरकत की थी। हज़रत मिक़दाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के तीर अंदाज़ों में से वर्णन किए जाते हैं।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 86 दारे अहया अत्तुरास बेरूत लबनान 1996 ई)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसूद रज़ि कहते हैं कि जंग बदर के मौक़ा पर मैंने मिक़दाद बिन असवद रज़ि की बात का एक ऐसा मन्ज़र देखा कि अगर मुझको हासिल हो जाता तो मुझे वह इन समस्त नेकियों से प्रिय होता जो सवाब में इस एक मन्ज़र के बराबर हो। कहते हैं हुआ यूं कि मिक़दाद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए जबकि आप मुशरिकों के ख़िलाफ़ दुआ कर रहे थे और कहने लगे कि हे रसूलुल्लाह हम इस तरह नहीं कहेंगे जिस तरह मूसा की क़ौम ने कहा था कि

فَاذْهَبْ اَنْتَ وَ رَبُّكَ فَقَاتِلَا ۔ وَلٰكِنَّا نُقَاتِلُ عَنْ يَمِيْنِكَ وَعَنْ شِمَالِكَ وَبَيْنَ يَدَيْكَ وَخَلْفَكَ،

अर्थात जा तू और तेरा रब दोनों जा कर लड़ो। नहीं बल्कि हम तो आप के दाएं भी लड़ेंगे बाएं भी और आगे भी लड़ेंगे और पीछे भी। मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखा कि आप का चेहरा चमकने लगा और मिक़दाद की इस बात ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ुश कर दिया

(सही अलबुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब क़ौल अल्लाह तआला इज़ा तस्तग़ीसून रब्बकुम..... हदीस 3952)

सीरत ख़ातिमुन्निबय्यीन में जंग बदर के हवाले से इस का कुछ विस्तार इस तरह वर्णन हुआ है कि दुश्मन की ख़बर पाकर जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनके इरादे जानने के लिए और अगर वह हमला करते हैं तो उनके हमले को रोकने के लिए बदर की तरफ़ रवाना हुए तो रौहा के क़रीब पहुंच कर आप ने बसीस और अदी नाम के दो सहाबियों को दुश्मन की हरकात का पचा लेने के लिए बदर की तरफ़ रवाना फ़रमाया और हुक्म दिया कि वे बहुत शीघ्र ख़बर लेकर वापस आएं। रौहा से आगे रवाना हो कर जब मुस्लमान वादई सफ़रा के एक पहलू से गुज़रते हुए ज़फ़रान में पहुंचे ,यह भी एक जगह का नाम है जो बदर से सिर्फ एक मंज़िल दूर है तो सूचना प्राप्त हुई कि क़ाफ़िला की सुराक्षा के लिए क़ुरैश का एक बड़ा लश्कर मक्का से आरहा है। तो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस पर समस्त सहाबा को जमा करके उन्हें इस ख़बर से सूचना दी और फिर उनसे मश्वरा पूछा कि अब क्या करना चाहिए। कुछ सहाबा ने निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह ज़ाहिरी माध्यमों का ख़्याल करते हुए तो यही बेहतर है कि क़ाफ़िला से सामना हो। हम देखें कि जो तिजारती क़ाफ़िला जा रहा है उनकी नीयत क्या है या वे क्या चाहते हैं? क्योंकि वे लश्कर अगर जंग के लिए आ रहा है तो उस के मुक़ाबले के लिए हम अभी पूरी तरह तैयार नहीं हैं। मगर आप ने इस राय को पसन्द नहीं फ़रमाया।

मदीना से चलते हुए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अक्सर सहाबा रज़ि को जो आप के साथ चले थे ज्ञान नहीं था कि हम जंग के लिए जा रहे हैं क्योंकि जंग की भी अवस्था पैदा हो सकती है। बल्कि उनको यह था कि एक क़ाफ़िला है इस को देखते हैं कि उनकी नीयत किया है? और फिर अगर उन्होंने कोई हमला किया तो छोटा क़ाफ़िला होगा इस से लड़ लेंगे लेकिन लश्कर का और बाक़ायदा जंग का तो मदीना से निकलते हुए सहाबा रज़ि को ख़्याल भी नहीं था लेकिन बहरहाल जब आप ने पूछा तो कुछ ने कहा कि लश्कर का मुक़ाबला तो हम कर नहीं सकते इसलिए हमें नहीं करना चाहिए। आप ने इस राय को पसन्द नहीं फ़रमाया

दूसरी तरफ़ बड़ा बड़ा सहाबा ने यह मश्वरा सुना तो उठ उठ कर जान कुरबान करने वाली तक़रीरें कीं और निवेदन किया कि हमारे जान तथा माल सब ख़ुदा के हैं। हम हर मैदान में हर ख़िदमत के लिए हाज़िर हैं। अत: मिक़दाद बिन असवद रज़ि ने जिनका दूसरा नाम मिक़दाद बिन अमरो रज़ि भी था जो असल नाम है। कहा हे रसूलुल्लाह हम मूसा के अस्हाब की तरह नहीं हैं कि आप को यह जवाब दें कि जा तू और तेरा ख़ुदा जा कर लड़ो हम यहीं बैठे हैं बल्कि हम यह कहते हैं कि आप जहां भी चाहते हैं चलें हम आप के साथ हैं। हम आप के दाएं और बाएं और आगे और पीछे हो कर लड़ेंगे। आप ने यह तक़रीर सुनी तो आप का मुबारक चेहरा ख़ुशी से तमतमाने लगा मगर इस अवसर पर भी आप अन्सार के जवाब की प्रतीक्षा कर रहे थे और चाहते थे कि वे भी कुछ बोलें क्योंकि आप को यह ख़्याल था कि शायद अन्सार यह समझते हूँ कि बैअत उक़बा के अधीन हमारा फ़र्ज़ सिर्फ इतना है कि अगर ठीक मदीना पर कोई हमला हो तो इस की प्रतिरक्षा करें। अत: बावजूद इस किस्म की जान कुरबान करने वाली ना तक़रीरों के जो मुहाजिर सहाबा ने कीं आप यही फ़रमाते गए कि अच्छा फिर मुझे मश्वरा दो कि क्या-किया जाए। सअद बिन मआज़ रज़ि जो ओस क़बीले के रईस थे उन्होंने आप के इच्छा को समझा और अन्सार की तरफ़ से निवेदन किया कि हे रसूलुल्लाह शायद आप हमारी राय पूछते हैं। ख़ुदा की क़सम जब हम आप को सच्चा समझ कर आप पर ईमान ले आए हैं तो हमने अपना हाथ आप के हाथ में हाथ दे दिया है तो फिर अब आप जहां चाहें चलें हम आप के साथ हैं और इस ज़ात की क़सम जिसने आपको हक़ के साथ मबऊस किया है अगर आप हमें समुन्द्र में कूद जाने को कहीं तो हम कूद जाऐंगे और हम में से एक आदमी भी पीछे नहीं रहेगा और आप इंशा अल्लाह हमको लड़ाई में धैर्य वाला पाएँगे और हम से वह बात देखेंगे जो आप की आँखों को ठंडा करेगी। आप ने यह तक़रीर सुनी तो बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया

سِيْرُوْا وَاَبْشِرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ قَدْ وَعَدَنِي اِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ وَاللّٰهِ لَكَاَنِّيْ اَنْظُرُ اِلٰى مَصَارِعِ الْقَوْمِ يعنى

तो फिर अल्लाह का नाम लेकर आगे बढ़ो और ख़ुश हो क्योंकि अल्लाह ने मुझ से वादा फ़रमाया है कि कुफ़्फ़ार के इन दो गिरोहों अरथात लश्कर या क़ाफ़िला जो है उनमें से किसी एक गिरोह पर वह हमको ज़रूर ग़लबा देगा और ख़ुदा की क़सम मैं गोया इस वक़्त वे जगहें देख रहा हूँ जहां दुश्मन के आदमी क़तल हो हो कर गिरेंगे।

(उद्धिरत सीरत ख़ातिमुल अन्बिया पृष्ठ 354-355)

फिर हज़रत मकदाद रज़ि के बारे में एक यह भी आता है कि जंग बदर में अल्लाह की राह में क़िताल करने वाले पहले घुड़सवार होने का सौभाग्य आप को हासिल हुआ। उनके घोड़े का नाम सबहा था। एक रिवायत के अनुसार जंग बदर में मुस्लमानों के दो घोड़ों का ज़िक्र मिलता है। हज़रत अली रज़ि कहते हैं कि बदर के दिन हमारे पास दो घोड़े थे एक हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि का था और दूसरा हज़रत मिक़दाद बिन असवद रज़ि का। इब्न हश्शाम के अनुसार जंग बदर के दिन मुस्लमानों के पास तीन घोड़े थे। हज़रत मरसद बिन अबू मरसद रज़ि के पास घोड़ा था जिसका नाम सबल था। हज़रत मिक़दाद बिन अमरो रज़ि के पास घोड़ा था जिसका नाम बअज़जा या सबहा और हज़रत ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि के पास घोड़ा था जिसका नाम यअसूब था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 86 दारे अहया अत्तुरास बेरूत लबनान 1996 ई)(दलायलुल नबुव्वत बहीकी भाग 3 पृष्ठ 39 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2002 ई)(अस्सीरतुन्नबिवय्यी ले इब्ने हश्शाम पृष्ठ 452 अस्मा ख़ैयलुल मुस्लिमीन यौम बदर, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2001ई)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि ने विभिन्न तारीख़ों से सीरत ख़ातिमुन्निबय्यीन में जो लिखा है इस के अनुसार जंग बदर में मुस्लमानों के पास सिर्फ दो घोड़े थे। कुछ किताबों में जैसा कि मैंने कहा है तीन का ज़िक्र मिलता है। कुछ में पाँच का ज़िक्र भी मिलता है

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

(उद्धिरत सीरत ख़ातमुल अनबिया लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ि एम-ए पृष्ठ 353)

(शरह अज़्ज़रकानी अलील मवाहेब अलद्दुनी भाग 2 पृष्ठ 260 बाब जंग बदर प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1996 ई)

(अस्सीरतुल हलिबया भाग 2 पृष्ठ 205 बाब ज़िक्र मुग़ाज़ी प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2002 ई)

बहरहाल ये घोड़े दो थे या तीन थे या पाँच थे लेकिन ये साबित है कि मुस्लमानों के जंगी सामान और काफ़िरों के जंगी सामान में कोई तुलना ही नहीं थी और काफ़िरों के हथियार तथा सामान के मुक़ाबले में मुस्लमान निहत्थे ही कहला सकते हैं लेकिन इस के बावजूद दुश्मन के मुक़ाबले के लिए जब खड़े हुए तो जैसा कि मुहाजिरीन ने भी और अन्सार ने भी आप से जो अहद किया था इस को पूरा कर के दिखाया

हज़रत मिक़दाद बिन अमरो कुन्दी क़बीला बनू ज़ुहरह के हलीफ़ थे और उन लोगों में से थे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ बदर में शरीक थे। उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा हे रसूलुल्लाह बताएं अगर कुफ़्फ़ार में से किसी आदमी से मेरा मुक़ाबला हो जाए और हम दोनों लड़ पड़ें और वह मेरा एक हाथ तलवार से काट डाले और फिर मुझ से एक दरख़्त की पनाह लेकर यह कहे। फिर दौड़ जाए और एक दरख़्त के पीछे छुप जाए और यह कहे कि मैं अल्लाह के लिए मुस्लमान हो गया। हे रसूलुल्लाह क्या अब मैं उसे मार डालूं जब कि उसने ऐसी बात कही है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम उसे क़तल ना करो। हज़रत मकदाद रज़ि ने कहा हे रसूलुल्लाह उसने मेरा एक हाथ काट डाला है और फिर उस के बाद ऐसा कहा है रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उसे क़तल ना करो क्योंकि अगर तुमने उसे क़तल कर दिया तो वह तुम्हारे इस स्तर पर हो जाएगा जो तुमको उस के क़तल करने से पहले हासिल था अर्थात ईमान का दर्जा और तुम उस के दर्जे पर हो जाओगे जो इस को इस के कलिमा के कहने से पहले हासिल था अर्थात काफ़िर होने की हालत में जिसको उसने कहा था

(सही अल-बुख़ारी किताबुल मग़ाज़ी बाब 12 हदीस 4019)

तो यह काल्पिनक बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सामने पेश की कि इस तरह हो कि उसने मेरा हाथ भी काट दिया हो फिर दरख़्त के पीछे छुप के वह कलिमा पढ़ ले और अल्लाह के लिए कहे मैं मुस्लमान हो गया हूँ तो क्या मैं बदला लूं? आप ने कहा नहीं। अगर लोगे तो वो काफ़िर मोमिन होगा और तुम ईमान के बावजूद इस काफ़िर की जगह खड़े होगे।

यह है कलिमा पढ़ने वाले का मुक़ाम जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ायम फ़रमाया और आजकल के उल्मा कहलाने वाले और इस्लामी हुकूमतें उनके यह कर्म देखें। काश यह ख़ुद देखें कि इस हदीस के अनुसार वह किस मुक़ाम पर खड़े हैं। मोमिन के मुक़ाम पर या काफ़िर के मुक़ाम पर

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ऊंट क़बीला बनू ग़फ़्फ़ार के एक चरवाहे की निगरानी में मदीना से बाहर चर रहे थे और इस चरवाहे की बीवी भी साथ थी। बनू फ़ज़ारह के उयैयनह बिन हिसन ने बनू ग़तफान के कुछ घुड़सवारों के साथ मिलकर हमला किया और चरवाहे को मार डाला और इस की बीवी और ऊंटों को साथ ले गए। हज़रत सलमा बिन अकवा रज़ि को सबसे पहले उन लोगों का इलम हुआ। उनके साथ हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह का ग़ुलाम घोड़ा लेकर निकला। जब हज़रत सलमह रज़ि सनीयतुल, विदा के नाम के बारे में मतभेद हैं। कुछ के नज़दीक यह मदीना से बाहर वह स्थान था जहां मक्का की तरफ़ जानेवाले लोगों को विदा किया जाता था जबकि दूसरे कथन के अनुसार यह सीरिया देश की तरफ मदीना से बाहर एक स्थान है और जंग तबूक से वापसी पर अहल मदीना ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यहां स्वागत किया था और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस जगह से कुछ सराया को विदा फ़रमाया था। बहरहाल यह जब वहां पहुंचे तो उन्होंने उयैयनह और इस के साथी को देख लिया और मदीना के क़रीब सलअ पहाड़ी पर चढ़ कर मदद के लिए पुकारा जाने वाला कलिमा बुलंद आवाज़ से कहा, लोगों को आवाज़ दी और कहा कि यह सबाहा फिर हज़रत सलमहा रज़ि तीर बरसाते हुए उनके पीछे दौड़ पड़े और उनके रुख मोड़ दिए। हज़रत सलमह रज़ि की मदद की पुकार सुनकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में ऐलान करवाया कि दुश्मन के मुक़ाबले के लिए निकलो तो शीघ्र घुड़सवार आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में आने शुरू हो गए और उनमें सबसे पहले जो लब्बैक कहते हुए आए वह हज़रत मकदाद रज़ि थे।

(शरह अज़्ज़रकानी भाग 2 पृष्ठ 166 से 169 प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1996 ई)

(अस्सीरतुन्नबिवय्या ले इब्ने हश्शाम भाग 3-4 पृष्ठ 174 से175 ग़ज़वा ज़ी क़िरद ,दारुल किताब अल-अरबी बेरूत लबनान 2008 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 2 पृष्ठ 63 बाब ग़ज़व रसूलुल्लाह प्रकाशक दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत1990 ई)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब मक्का पर चढ़ाई करने की तैयारी फ़रमाई तो इस मुहिम को बहुत छुपा कर रखा गया और बावजूद उस के कि सहाबा इस मुहिम की तैयारी कर रहे थे लेकिन यह आम नहीं था कि मक्का की तरफ़ जाना है। इस अवसर पर एक बदरी सहाबी हज़रत हातिब बिन बलतआ ने अपनी सादगी और नादानी में मक्का से आई हुई एक औरत के हाथ एक ख़ुफ़ीया ख़त मक्का रवाना कर दिया जिसमें मक्का पर हमला करने की सारी तैयारीयों का ज़िक्र कर दिया। वह औरत ख़त लेकर चली गई तो अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस की ख़बर दे दी। अत: आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि को दो तीन लोगों के साथ जिन में हज़रत मिक़दाद भी शामिल थे इस औरत का पीछा करने और वह ख़त लेने के लिए रवाना फ़रमाया। अत: हज़रत अली रज़ि से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे,ज़ुबेर रज़ि और मकदाद रज़ि को भेजा और फ़रमाया कि रूज़त ख़ाख़ जाओ । वहां एक ऊंठ सवार औरत है। इस के पास एक ख़त है। इस से वह ले लो। अत: हम चल पड़े। हमारे घोड़े हमें लेकर सरपट दौड़े। हम इस औरत के पास पहुंचे तो हमने कहा कि ख़त निकालो। उसने कहा कि मेरे पास तो कोई ख़त नहीं। हम ने कहा कि तुम ज़रूर ख़त निकालोगी या तुम्हें अपने कपड़े उतारने पड़ेंगे। उसने वह अपने बालों के जूड़े से निकाला तो हम इस ख़त को लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए जो इन सहाबी ने काफ़िरों के नाम लिखा था। लिखा तो अपनी मासूमियत की वजह से था लेकिन बहरहाल यह मामला क्योंकि कुछ ख़ुफ़ीया था तो उस पर यह सब कुछ राज़ खुल जाना था। बहरहाल अल्लाह तआला ने ख़बर दी और यह ख़त वापस आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंच गया।

(सही मुस्लिम किताब फ़ज़ाइल अलसहाबा बाब मन फ़ज़ाइल अहल बदर रज़ी अल्लाह अन्हुम व किस्सत हातिब बिन अबी बलता हदीस 2494)

मूसा बिन याक़ूब अपनी फूफी से और वह अपनी माता से रिवायत करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत मकदाद रज़ि को ख़ैबर की पैदावार में से पंद्रह वसक जौ सालाना प्रदान फ़रमाया था जो लगभग सवा छप्पन मन जो सालाना बनता है वह हम ने मुआवीया बिन अबू सुफ़ियान के हाथ एक लाख दिरहम में बेच दिया था।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 86 दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

यह सालाना स्थायी आय थी और हो सकता है कि कुछ सालों की पैदावार या स्थायी पैदावार बेची हो क्योंकि सिर्फ छप्पन मन की तो इतनी ज़्यादा क़ीमत नहीं हो सकती। जंग यरमूक में भी हज़रत मकदाद रज़ि ने शिरकत की थी और इस जंग में क़ारी हज़रत मिक़दाद थे। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जंग बदर के बाद यह सुन्नत जारी फ़रमाई थी कि जंग के वक़्त सूरह इन्फ़ाल की तिलावत की जाती थी। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद भी लोग इस बात पर अनुकरण करते रहे।

(तारीख़ अत्तिबरी भाग 4 पृष्ठ 59 सुम्मा दख़लत सनत सलास अशर ख़बर अलयमूक, दारुल फ़िक्र बेरूत लबनान 2002 ई)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक सरिया भेजा था इस पर हज़रत मकदाद रज़ि को अमीर बनाया था। जब वो वापस आया तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि हे अबू मअबद तू ने इमारत के मन्सब को कैसा पाया तो उन्होंने अर्ज़ क्या या रसूलुल्लाह मैं जब निकला तो मेरी यह हालत हुई कि मैं दूसरे लोगों को अपना

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

ग़ुलाम तसव्वुर कर रहा था। इस पर आप ने फ़रमाया कि हे अबू मअबद इमारत इसी तरह है सिवाए उस के कि जिसे अल्लाह तआला उस की बुराई से महफ़ूज़ रखे। मकदाद रज़ि ने अर्ज़ क्या कोई शक नहीं। इस ज़ात की क़स्म जिसने आपको हक़ के साथ नबी बना कर भेजा है मैं दो आदमीयों पर भी निगरान बनना पसंद ना करूँगा।

(अलअसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 6 पृष्ठ 207-208 मअबद बिन मिक़दाद, दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2005 ई)

मुझे यह एक तजुर्बा हुआ और इस में मैंने देखा कि मुझे यूं लगा कि सब मेरे ग़ुलाम हैं तो मैं इस के बाद इस नतीजे पर पहुंचा हूँ कि मुझे तो यह पसंद ही नहीं कि कभी किसी दो आदमीयों का भी निगरान बनूं। यह तक़्वा का स्तर था उन लोगों का कि अफ़्सर बनने से गर्व पैदा हो सकता है। इसलिए मैं पसंद नहीं करता कि दो आदमी भी मेरे अधीन हूँ। अत: हमारे सब अफ़सरों को भी हमेशा यह याद रखना चाहिए कि पहले तो इच्छा नहीं करनी और जब अफ़्सर बनाया जाए, ओहदा दिया जाए तो अल्लाह तआला से इस ओहदे की बुराई से बचने की दुआ भी मांगनी चाहिए और अल्लाह तआला कभी गर्व पैदा ना करे और इस का फ़ज़ल माँगना चाहिए

हज़रत मकदाद रज़ि हुम्मस के घेराव में हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि के साथ थे।

(तारीख़ अत्तिबरी भाग 4 पृष्ठ 185 सुम्मा दख़लत सन् ख़ुमस अशर ज़िक्र फ़तह हुम्मस, दारुल फ़िक्र लिलतबाह वन्शर वत्तौज़ीइ बेरूत लबनान 2002 ई)

हज़रत मकदाद रज़ि ने मिस्र की फ़तह में भी हिस्सा लिया

(अल इस्तीयाब फ़ी मारफ़तुस्हाबा भाग 4 पृष्ठ 43 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2002 ई)

20 हिज्री में जब मिस्र पर फ़ौजकशी हुई और हज़रत अमरो बिन आस रज़ि अमीर लशकर ने दरबार ख़िलाफ़त से और अधिक सहायता मांगी तो हज़रत उमर रज़ि ने दस हज़ार सिपाही और चार अफ़्सर जिनमें से एक हज़रत मकदाद रज़ि भी थे उनकी मदद के लिए रवाना फ़रमाए और लिखा कि इन अफ़िसरों में से हर एक दुश्मन के एक हज़ार सिपाहियों के बराबर है। अत: वास्तवस इस सहायता के पहुंचते ही जंग की हालत बदल गई और निहायत थोड़े समय में सारी सरज़मीन जो फ़िरऔन की ज़मीन थी तौहीद का विरसा बन गई

(सैरुस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 286 हज़रत मिक़दाद बिन अमरो, दारुल इशाअत कराची 2004 ई)

जुबैर बिन नुफ़ैर वर्णन करते हैं कि हज़रत मिक़दाद बिन असवद रज़ि हमारे पास किसी काम से तशरीफ़ लाए तो हमने कहा। अल्लाह तआला आपको सेहत तथा सलामती से रखे। आप तशरीफ़ रखें यहां तक कि हम आपका काम कर दें। उन्होंने कहा कि क़ौम की हालत पर आश्चर्य आता है। अभी जब आए तो कहा मैं इन लोगों के पास से गुज़रा, कुछ लोगों के पास गुज़रा तो वे फ़ित्ने की तमन्ना कर रहे थे। वे गुमान कर रहे थे कि अल्लाह तआला उन्हें ज़रूर वैसे ही आज़माएगा जैसे उसने अपने रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और इस के सहाबा को आज़माया था। वह कहने लगे कि अल्लाह की क़सम मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि ख़ुश किस्मत वह है जो फ़ित्नों से बचाया गया। यह बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीन बार दुहराई और आपने फ़रमाया कि अगर इबतिला आ जाए तो फिर सब्र है।

(अलमुअजमुल कबीर लेत्तिबरानी भाग 20 पृष्ठ 252-253जुबैर बिन नुफ़ैर अनिल मक़दाद बिन अल-असवद , दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत)

कि फ़ित्नों की अर्थात किसी आज़माईश की और सख़्ती की दुआ नहीं करनी चाहिए, ना इच्छा करनी चाहिए लेकिन अगर इबतिला आ जाए, इमतिहान आ जाए तो फिर उस पर सब्र दिखाना चाहिए और फिर दृढ़ता दिखाना चाहिए ना यह कि फिर बुज़दिली दिखाई जाए।

हज़रत मिक़दाद का जिस्म भारी भरकम था लेकिन इस के बावजूद जिहाद के लिए निकलते थे। एक बार किसी सुनार के संदूक़ के पास बैठे थे तो हज़रत मिक़दाद सन्दूक़ से भी बड़े नज़र आ रहे थे। किसी ने उनसे कहा कि अल्लाह तआला ने आपको जिहाद से माज़ूर फ़रमाया है। काफ़ी मोटे हैं और जैसा कि उनकी बेटी ने बताया है कि पेट बड़ा था। हज़रत मिक़दाद ने जवाब दिया कि मुझ पर सूरा बहूस। (बहूस सूरा तौबा का भी दूसरा नाम है क्योंकि इस सूरत में मुनाफ़क़ीन और उनके राज़ों को खोला गया है।) कहते हैं मुझे इस सूरत ने लाज़िम क़रार दिया है कि

.....

(अत्तूबा 41) कि जिहाद के लिए निकलो चाहे हल्के हो या भारी हो।

(अहकामुल कुरआन ले इब्ने अरबी भाग 2 पृष्ठ 444 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2003 ई)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 87 दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी अल्लाह तआला अन्ना ने ख़िफ़ाफन व सिकालन की वज़ाहत यूं वर्णन फ़रमाई है कि इस आयत में मुस्लमानों को ताकीद की गई है कि ख़ुदा की राह में जिहाद के लिए निकलें और किसी किस्म की मुश्किल उनके रस्ते में नहीं आनी चाहिए। ख़िफ़ाफन व सिकालन के कई अर्थ हैं तुम बूढ़े हो या जवान हो आदमी, लोगों या गिरोहों में से हो। पैदल हो या सवार हो। तुम्हारे पास हथियार काफ़ी हैं या नहीं हैं। ख़ुराक काफ़ी है या नहीं है

(उद्धरित दरूस हज़रत मुस्लेह मौऊद अप्रकाशक , रजिस्टर नम्बर 36 पृष्ठ 1006)

हज़रत मकदाद रज़ि ने इस आयत से क्योंकि कई मअनी हैं उस के जिस्म का हल्का होना और भारी होना मुराद लेकर अपने शौक-ए-जिहाद का भी इज़हार किया

हज़रत मकदाद रज़ि का पेट बहुत ज़्यादा बढ़ा हुआ था। उनका एक रूमी ग़ुलाम था वह उनसे कहने लगा कि मैं आपके पेट को काट कर चर्बी निकाल दूँगा (उस ज़माने में जो भी ऑप्रेशन का तरीक़ा था इस से वह हल्का हो जाएगा। आजकल भी लोग करते हैं। अत: उसने हज़रत मकदाद रज़ि का पेट काट दिया और चर्बी निकाल कर दोबारा सी दिया। लेकिन इस वजह से हज़रत मकदाद रज़ि की वफ़ात हो गई। कोई इन्फ़ैक्शन इत्यादि हो गया। ठीक नहीं हो सके। बहरहाल वह ग़ुलाम यह देख के फिर वहां से भाग गया।

(अल-असाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 6 पृष्ठ 161 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2005 ई)

लेकिन एक और रिवायत भी है इस के अनुसार हज़रत मकदाद रज़ि की वफ़ात दुहुनुल ख़िज़रूअ कैस्टर ऑयल पीने की वजह से हुई थी। यह अबू फ़ायद ने रिवायत की है। हज़रत मिक़दाद ओ की बेटी करीमा कहती हैं कि हज़रत मकदाद रज़ि की वफ़ात मदीने से तीन मील के दूरी पर जुरफ स्थान पर हुई। वहां से उनकी लाश को लोगों के कंधों पर उठा कर मदीना लाया गया। हज़रत उसमान रज़ि ने उनकी नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और जन्नतुल बक़ी में उन्हें दफ़न किया गया। तैंतीस हिज्री में हज़रत मकदाद रज़ि की वफ़ात हुई थी। वफ़ात के वक़्त उनकी उम्र सत्तर साल या उस के क़रीब थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने सअद भाग 3 पृष्ठ 87 दारे अहया अत्तुरास अल-अरबी बेरूत लबनान 1996 ई)

इब्ने बुरीद अपने पिता से रिवायत करते हैं कि उन्होंने वर्णन किया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अल्लाह ने मुझे चार से मुहब्बत करने का हुक्म दिया है और मुझे बताया गया है कि वह भी उनसे मुहब्बत करता है। सवाल किया गया कि हे रसूलुल्लाह वे कौन हैं? आप ने फ़रमाया (इब्न माजा की रिवायत है)। मुख़्तलिफ़ वक़्तों में मुख़्तलिफ़ है। बहरहाल ये रिवायत यही है ।कहते हैं आप ने फ़रमाया कि अली रज़ि उन में से हैं, ये आप ने तीन बार फ़रमाया और फिर अबू ज़र रज़ि, फिर सलमान रज़ि और मिकदाद रज़ि हैं

(सुनन इब्न माजा मुक़द्दमा अल-मौअल्लिफ़ बाब फ़ज़ल सलमान व अबी ज़र वल मकदाद हदीस 149)

हज़रत अली रज़ि से रिवायत है कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हर नबी को सात सात नजीब रफक़ा(साथी) दिए गए हैं। रावी कहते हैं कि या आप ने रफ़क़ा के स्थान पर निगरान का शब्द प्रयोग फ़रमाया था लेकिन मुझे 14 प्रदान किए गए हैं हमने निवेदन किया कि वे कौन हैं तो हज़रत अली रज़ि कहते हैं कि आप ने फ़रमाया कि एक तो मैं हूँ अर्थात हज़रत अली रज़ि मेरे दो बेटे हस्न रज़ि और हुसैन रज़ि, जाफ़र रज़ि, हमज़ रज़ि, अबू बकर रज़ि, उमर रज़ि, मसअब बिन उमैर रज़ि, बिलाल रज़ि, सलमान रज़ि , अम्मार रज़ि, मकदाद रज़ि, हज़ीफ़ रज़ि, अबू ज़र रज़ि और अब्दु-ल्लाह बिन मसूद रज़ि। यह सुनन तिरमिज़ी की रिवायत है।

(सुनन अत्तिरमज़ी किताबुल मनाकिब बाब इन्नल हसन वल हुसैन सय्यद अशबाब अहलुल जन्नत हदीस 3785)

क़ुरआन करीम की सूरह अनआम की आयत है कि

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ

(अलअनाम 53) और तू उन लोगों को ना धुतकार जो अपने रब को इस की रज़ा चाहते हुए सुबह भी पुकारते हैं और शाम को भी। तेरे ज़िम्मा उनका कुछ भी हिसाब नहीं और ना ही तेरा कुछ हिसाब उनके ज़िम्मा है। अत: अगर फिर भी तो उन्हें धुतकार देगा तो तू ज़ालिमों में से हो जाएगा।

हज़रत सअद इस आयत के बारे में वर्णन करते हैं। यह भी इब्न माजा की रिवायत है कि यह आयत छ: लोगों के बारे में नाज़िल हुई कि मैं ख़ुद अर्थात हज़रत सअद रज़ि, इब्न मसूद रज़ि, सुहैब रज़ि, अमार रज़ि, मकदाद रज़ि और बिलाल रज़ि।

हज़रत सअद रज़ि ने कहा कि क़ुरैश ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से कहा कि हम इस बात पर राज़ी नहीं हैं कि इन लोगों के अधीन हों। अत: तू उन्हें अपने पास से धुतकार दे। रावी कहते हैं कि इस आधार पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में वह बात दाख़िल हुई जो अल्लाह ने चाहा कि दाख़िल हो तो अल्लाह तआला ने आप पर यह आयत नाज़िल फ़रमाई

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدَاةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ

(अलअनाम 53)और तो उन लोगों को ना धुतकार जो अपने रब को इस की रज़ा

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 2-9 January 2019 Issue No. 1-2

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

चाहते हुए सुबह भी पुकारते हैं और शाम को भी

(सुनन इब्न माजा किताबुल ज़ुहद बाब मजालस अलफ़क़रा हदीस 4128)

बहरहाल इस आयत की वजह जो भी थी लेकिन यह कहते हैं कि आँहज़रत सल्ल-ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यही जवाब दिया।

एक रिवायत के अनुसार हज़रत मकदाद रज़ि पहले सहाबी थे जिन्होंने अल्लाह तआला के रास्ते में घोड़े पर लड़ाई में हिस्सा लिया

(अलअसाबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा भाग 6 पृष्ठ 160 अलमक़दाद बिन अल-असवद दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2005 ई)

यह भी थोड़ा सा पहले वर्णन हो चुका है। हज़रत मकदाद रज़ि से रिवायत है कि वह एक रोज़ शौच के लिए बक़ीअ की तरफ़ गए जो क़ब्रिस्तान है। लोग उस वक़्त दो तीन रोज़ बाद शौच के लिए जाया करते थे और वह शौच के लिए एक वीराना में दाख़िल हुए और इस दौरान में क्योंकि खाना बहुत कम होता था और कहते हैं कि पाख़ाना भी ऊंट की मेंगनियों की तरह होता था और इस दौरान में शौच के लिए बैठे हुए थे तो उन्होंने एक चूहा देखा जिसने बिल में से एक दीनार निकाला। फिर अंदर गया और एक और दीनार निकाला यहां तक कि उसने 17 दीनार निकाले। इस के बाद एक लाल रंग का कपड़ा निकाला। हज़रत मकदाद रज़ि कहते हैं कि मैंने इस कपड़े को खींचा तो इस में एक दीनार पाया इस तरह 18 दीनार हो गए। फिर मैं उनको लेकर निकला और उन्हें लेकर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और आप को सारी बात बताई और निवेदन किया हे रसूलुल्लाह इस का सदक़ा ले लीजिए। आप ने फ़रमाया उस का कोई सदक़ा नहीं है। इन्हें ले जाओ। अल्लाह तआला उनमें तुम्हारे लिए बरकत डाल दे। फिर आप ने फ़रमाया शायद तुम ने उस सुराख़ में हाथ डाला होगा। मैंने अर्ज़ किया कि नहीं इस ख़ुदा की क़सम जिसने आप को हक़ के द्वारा इज़्ज़त बख़शी है कि मैंने हाथ नहीं डाला था बल्कि इसी तरह अल्लाह तआला ने मेरे लिए इंतिज़ाम कर दिया।

(सुनन इब्न माजा किताब अल्लुकत बाब इख़राजल जुर हदीस 2508)

जुबैर बिन नुफ़ैर रिवायत करते हैं कि एक दिन हम हज़रत मकदाद रज़ि के साथ मज्लिस में बैठे हुए थे कि एक आदमी गुज़रा और उसने कहा क्या ही मुबारक आँखें हैं जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का दर्शन किया है। अल्लाह की क़सम हमारी दिली इच्छा है कि हम भी देखते जो आप ने देखा है। सहाबा की तरफ़ इशारा कर के कहा कि जो आप लोगों ने देखा है और हम भी इस का दर्शन करते जिसका आपने देखा है। यह सुनकर हज़रत मकदाद रज़ि ग़ुस्सा में आ गए। रावी कहते हैं कि मैंने बड़े ताज्जुब से पूछा कि इस शख़्स ने तो केवल ख़ैर की बात की है। हज़रत मकदाद रज़ि ने इस शख़्स की तरफ़ ध्यान देते हुए कहा कि इस शख़्स को कौन सी चीज़ उस ज़माने में हाज़िर होने की तमन्ना पर मजबूर कर रही है जिससे अल्लाह ने उसे ग़ायब रखा। फिर कहने लगे कि हमें क्या मालूम कि अगर यह उस वक़्त होता तो किस स्थान पर होता। फिर उन्होंने कहा कि अल्लाह की क़सम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ज़माना तो ऐसे लोगों ने भी पाया जिन्हें अल्लाह ने औंधे मुँह दोज़ख़ में डाल दिया क्योंकि उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ना माना और ना ही आप की तसदीक़ की। अब यह जो कह रहा है कि क्या पता उस वक़्त उस की क़िस्मत में किया था। अगर तसदीक़ ना करता तो फिर दोज़ख़ में जाता।

फिर आगे कहने लगे कि तुम अल्लाह की प्रशंसा क्यों नहीं करते कि उसने तुम्हें ऐसे वक़्त में पैदा किया जिसमें तुम सिर्फ अपने रब को पहचानने वाले हो। किसी किस्म का शिर्क नहीं करते। अपने रब को पहचानते हो। रसूल पर ईमान लाते हो और अपने नबी की लाई हुई शरीयत की तसदीक़ करने वाले हो और अल्लाह ने दूसरों के द्वारा तुम्हें आज़मा-ईशों से बचा लिया। पहले लोग थे या उस ज़माने के दूसरे लोग थे आज़माईशों में से गुज़रे। तुम्हें अल्लाह ने इन आज़माईशों से बचा लिया है। तुम इस पर ख़ुदा का शुक्र अदा करो। फिर कहने लगे कि ख़ुदा की क़सम अल्लाह तआला ने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जाहिलियत के ज़माने में भेजा और फ़ितर वही के ज़माने में जो किसी भी नबी की बिअसत के ज़माने से सबसे ज़्यादा सख़्त ज़माना था अर्थात वह ज़माना जब एक लंबा अरसा के बाद नुज़ूल हुआ। एक नबी के बाद दूसरे नबी के बीच जो वक़फ़ा है इस में वह्य नहीं होती या इस से एक लम्बा अरसा था जो एक नबी और दूसरे नबी के बीच का होता है और इस में अंबिया की वह्य नहीं होती। इस शब्द को फ़ितर हैं। तो कहते हैं जो लम्बा अरसा था जिस में वह्य नहीं हुई या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मबऊस नहीं हुए वह ज़माना बड़ा लंबा था जिसमें शिर्क भी फैल गया। फिर आप ने कहा कि यह बड़ा सख़्त ज़माना था। लोग बुतों की पूजा करते थे और इस से उत्तम किसी को का रोब था जो सहाबा किराम रज़ि पर था और ऐसा ही अनबिया अलैहिमुस्सलाम के साथ यह रौब इलाही निशान स्वरूप आता है। वो पूछ लेते थे कि अगर यह वह्य इलाही है तो हम मुख़ालिफ़त नहीं करते और वह एक भय में आ जाते थे।

बात करने वाले के सामर्थ्य के अनुसार उस की वाणी में एक महानता और प्रताप होता है। देखो दुनियावी हुक्काम के सामने जाते समय भी एक तकलीफ़ और रौब होता है और विचार होता है कि उनके हाथ में क़लम है। इसी तरह पर जो लोग यह मालूम कर लेते हैं कि मोमिन के साथ ख़ुदा है वे उस का विरोध छोड़ देते हैं और अगर समझ में ना आए तो अकेले बैठ कर इस पर ग़ौर करते हैं। और मुक़ाबला कर के सोचते हैं। यह बहुत ज़रूरी होता है कि रास्ता जानने वाले और रोशनी वाले के दूसरे अधीन हो जाएं और यही हदीस اِتَّقُوْا فِرَاسَةَ الْمُؤْمِنِ की मंशा और तात्पर्य है। अर्थात जब मोमिन कुछ वर्णन करे तो ख़ुदा तआला से डरना चाहिए क्योंकि वह जो कुछ बोलता है वह ख़ुदा तआला की तरफ़ से बोलता है। मुद्दा यह है कि मोमिन जब ख़ुदा से मुहब्बत करता है तो इलाही नूर इस पर छा जाता है ,यद्यपि वह नूर उस को अपने अंदर छुपा लेता है और इस की बशरियत को एक सीमा तक भस्म कर जाता है। जैसे आग में पड़ा हुआ लोहा हो जाता है लेकिन फिर भी वह उबूदीयत और बशरियत समाप्त नहीं हो जाती। यही वह राज़ है जो قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ (अलकहफ़:111) की तह में केन्द्रित है। बशरियत तो होती है मगर वह उलूहियत के रंग के नीचे छुप जाती है और इस के समस्त अंग और भाग अल्लाह तआला के मार्गों में ख़ुदा तआला के इरादों से भर कर उस की ख़्वाहिशों की तस्वीर हो जाते हैं। और यही वह अन्तर है जो इस को करोड़ों मख़लूक़ की रुहानी तर्बीयत का ज़िम्मेदार बना देता है और सम्पूर्ण रबूबियत का एक द्योतक क़रार देता है। अगर ऐसा ना हो तो कभी भी एक नबी इतनी मख़लूक़ों के लिए हिदायत देने वाला और मार्ग दर्शक ना हो सके।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 103 से 108)

☆ ☆ ☆

नहीं मानते थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़ुर्क़ान के साथ मबऊस हुए जिसने हक़ तथा बातिल में फ़र्क़ कर दिया और पिता और बेटे के बीच फ़र्क़ कर दिया यहां तक कि एक आदमी अपने पिता, बेटे या भाई को काफ़िर समझता था जबकि अल्लाह ने इस के दिल का ताला ईमान के लिए खोल दिया था। फिर कहते हैं कि वह जानता था कि अगर वह कुफ़्र की हालत में मर गया तो दोज़ख़ में जाएगा। उस की आँखें ठंडी ना होती थीं जब उसे मालूम होता था कि इस का महबूब जहन्नुम में रहेगा। यही वजह है कि जब इस्लाम जो उन्होंने क़बूल कर लिया और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मान लिया तो वह अपने रिश्तेदारों के बारे में फ़िक्रमंद रहते थे और पता था कि क़बूल नहीं करेंगे। अगर मुख़ालिफ़त करेंगे तो जहन्नुम में जाऐंगे और इस के लिए फिर कहते हैं कि यही वजह है जिसके बारे में अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيَّاتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ

(अल-फ़ुर्क़ान 75) कि और वे लोग जो यह कहते हैं कि हे हमारे रब हमें अपने जीवन साथियों और अपनी औलाद से आँखों की ठंडक प्रदान कर।

(मस्नद अहमद बिन हंबल भाग 7 पृष्ठ 890 हदीस अल मिक़दाद बिन अल-असवद हदीस नम्बर24311 आलेमुल कुतुब बेरूत लबनान 1998 ई)

तो यह दुआ है जो हमेशा करनी चाहिए ताकि नस्लों में भी धर्म क़ायम रहे। और अल्लाह का जो फ़ज़ल हुआ है इस का शुक्र अदा करना चाहिए।

हज़रत अनस कहते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक आदमी के क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनी जो ऊंची आवाज़ में तिलावत कर रहा था तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह अल्लाह तआला का रखने वाला इन्सान है। वह हज़रत मिक़दाद बिन अमरो रज़ि थे।

(अल- इस्तेयाब फ़ी मारफ़तुल सहाबा भाग 4 पृष्ठ 44 दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत लबनान 2002 ई)

अल्लाह तआला हमें भी इस्लाम की हक़ीक़त को समझने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की उम्मत में होने का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए और अपने अंदर ख़शीयत भी पैदा करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

(अलफ़ज़ल इंटरनैशनल13 दिसम्बर 2019 ई पृष्ठ 5 से 9)

☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad